ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

# पायस

जून, 2021

◆ पर्यावरण स्वस्थ है तो जीवन है

◆ परिवार है जरूरी

चले गए धरती पुत्र

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

# पायस

जून 2021
वर्ष : 1, अंक : 6

## इस अंक की रचनाएं

### कहानियां


| | | |
|---|---|---|
| प्रकाश मनु | : भोला भाई के बिस्कुट | : 10 |
| राकेश सोहम् | : बल और बुद्धि | : 16 |
| हेमंत यादव | : जूते गायब | : 20 |
| कुसुम अग्रवाल | : छोटा सा पैकेट | : 24 |
| डॉ. फकीर चंद शुक्ला | : लौट आया बुद्धू | : 28 |
| रोचिका अरुण शर्मा | : यूं मुसकराए | : 32 |
| मोहम्मद अरशद खान | : धीमे-धीमे-धीमे | : 35 |
| निश्चल | : अरे वाह पापा! | : 38 |
| डॉ. विजय कुमार | : बबलू की बिल्ली | : 42 |
| शिवचरण सरोहा | : धूप और छाया | : 47 |
| डॉ. अशोक | : मोहन का घमंड | : 48 |


### कविताएं


| | | |
|---|---|---|
| गिरीश पंकज | : 'पायस' जिसका नाम | 5 |
| विनोद पदरज | : पिंजरा और पेड़ | 13 |
| उमेश चंद्र सिरसवारी | : पेड़ लगाओ | 18 |
| गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल' | : नानी का गाँव | 31 |
| डॉ अलका अग्रवाल | : कोरोना तुम कब जाओगे | 34 |
| डॉ.प्रीति प्रवीण खरे | : तरह-तरह के पेड़ | 36 |
| दिशा ग्रोवर | : वृक्ष का न्योता | 37 |
| प्रभात कुमार धवन | : मछली और मांझी | 50 |


### जानकारी

पर्यावरण स्वस्थ है तो जीवन है : 6, परिवार जरूरी है : 14, चले गए धरती पुत्र :19, परिवार की मदद करो : 22, मोहम्मद साजिद खान : आओ बनाएं गौरैया के लिए घर : 26, पोलर बीयर : 40, दुनिया में साइकल : 51,

### विविध

धन्यवाद ज्ञापन : 4, पर्यटन : रेनू मंडल : लक्षद्वीप की सैर 44, पुस्तक परिचय : 49, चित्रकथा : लल्लू 60, जरा सोचो : 61, खेल : 62, हंसना जरूरी है 63, अपील : 64,

### बाल मंच

चित्र (52-55)-अंशिका, ऐशनी सैनी, आर्ना श्रीवास्तव, शान्वी प्रकाश, प्रिशा चौखड़ा, प्रकृति, दीक्षान्त पटेल, काव्या श्रीवास्तव, समृद्धि यादव, शुभी पाण्डेय,
कहानियां-मानवी : घमंडी बालक 56, :दिव्यांशु प्रियम झा : लालकिले की सैर 59
कविताएं : काजल साह : मेरी दादी 57, वरेण्य : जल से जीवन 57,
खुशी कुमारी : इनसान 58, निखिल कुमार राव : माँ 58

# पर्यावरण दिवस के बहाने

**इस** जून के महीने के साथ हम साल 2021 के आधे पड़ाव तक पहुंच गए। पर यह पड़ाव तो कागजी पड़ाव है। जीवन तो जैसे ठहर ही गया है। इस करोना के दंश से उबरने में दशक भी लग जाए, तो बड़ी बात नहीं।

तुम बच्चे तो यह समझ भी नहीं पा रहे होगे कि तुमने अपने स्कूली जीवन का एक साल ही नहीं खोया है, बल्कि भविष्य में जिंदगी को समझने का नजरिया भी खोया है। पढ़ाई तो रस्मी तौर पर ऑनलाइन चलती रही, पर साथ रहकर बच्चे जो कुछ एक-दूसरे से सीखते हैं, प्रतिस्पर्धा का जो भाव स्कूल में आता है, वो कहां से घर बैठे मिलेगा?

न आउटिंग न रिश्तेदार या दोस्तों से मिलना, यह सब इनसान को जड़ता की ओर भेज रहा है, फिर से एक्टिव मोड पर आना असंभव तो नहीं पर मुश्किल कार्य होगा। मेरा विश्वास है, अंत में हम मानव इस विपदा को छोड़कर फिर से एक प्यार भरी जिंदगी जरूर जिएंगे।

यह जून का महीना पर्यावरण दिवस भी लेकर आता है। मतलब इसके बहाने हम पर्यावरण की बात करते हैं, प्रतियोगिता आयोजित करते हैं, अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित करते हैं और इस दिन के बीतते ही सब भूलकर फिर से वही जिंदगी जीने लगते हैं, वही सब काम करने लगते हैं, जो पर्यावरण को विनाश की ओर लेता जा रहा है।

आए दिन प्राकृतिक आपदाएं आ रही हैं और हमें चेता रही हैं कि अब जागो, नहीं तो दुबारा मौका नहीं मिलेगा। इसी मई में हमने दो तूफान 'ताउते' और 'यास' का कहर देखा है। इससे पहले उत्तराखंड में नियमित रूप से बादल फटने की घटनाएं होती रही हैं।

बार-बार प्रकृति हमें चेतावनी भेज रही है कि पर्यावरण पर दवाब मत बनाओ। घूम-फिरकर मार धरती पर रहने वालों पर ही पड़ेगी।

पर हम इनसान अगर धरती के सबसे समझदार प्राणी हैं तो सबसे जिद्दी होने का तमगा भी हमसे कोई छीन नहीं सकता। और जिद्दी की समझ में बात जल्दी आती नहीं है।

पर्यावरण का सम्मान कैसे कर सकते हैं, यह जानना हो, तो धरती पुत्र सुंदरलाल बहुगुणा जी के जीवन को फॉलो करो। पूरी उम्र इस धरती, इसके पर्यावरण के लिए काम करने वाले इस धरती पुत्र को भी हमसे कोरोना ने छीना, पर जाने से पहले अपने जीवन और अपने विचार से वह हमें राह दिखा गए हैं।

वह बहुत चिंतित थे और उनका स्पष्ट मानना था कि, 'हम इनसान पर्यावरण को लेकर जितनी चिंता जताते हैं, उतना चिंता करते नहीं।'

वह हमारी पीढ़ी से निराश थे। पर बच्चों, तुम बड़े होकर उनकी इस चिंता को गलत साबित करना।

अनिल जायसवाल

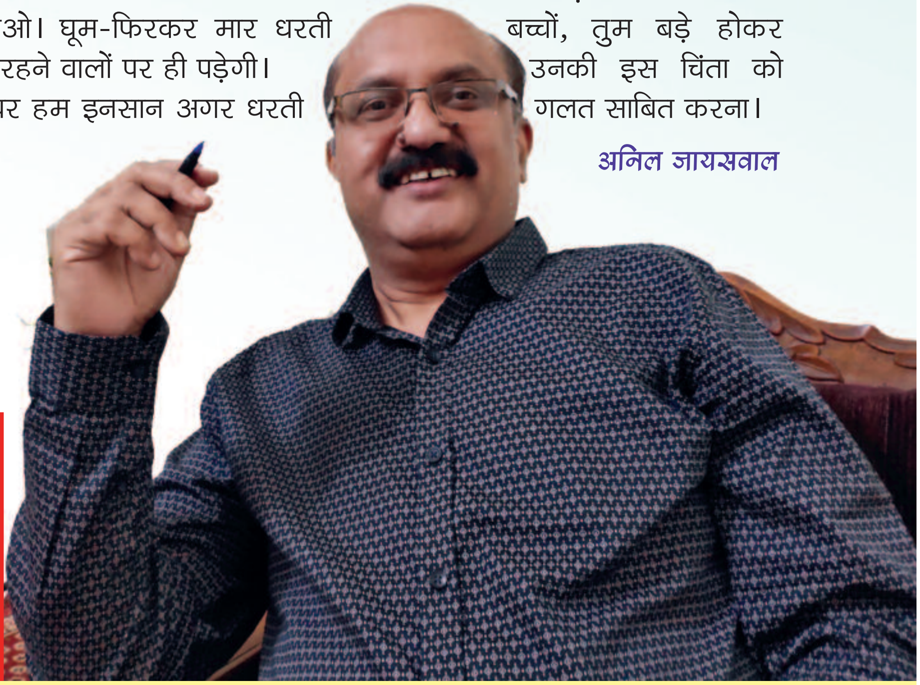

## एक अपील

यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद इसका 20 रुपए शुल्क मानकर सहयोग करें। धन्यवाद


ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका **पायस**

संपादक : अनिल जायसवाल

Email : payasmagazine@gmail.com
Facebook : https://www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp : 7982014609
Youtube : payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog : https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

- लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।
- ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादकीय पता : **PAYAS MAGAZINE**
**Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,**
**West Punjabi Bagh, New Delhi-110026**

# धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। अब पायस का नया अंक आप सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. डॉ. तृप्ति
2. मोनिका अग्रवाल
3. दीप्ति मित्तल
4. राजेश उत्साही
5. विनोद पारीख
6. प्रभा खन्ना

## एक अपील

पत्रिका तैयार करने में धन की आवश्यकता होती है। तमाम खर्चों के बावजूद यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

भुगतान करना चाहें तो

1 प्रति : 20 रुपए, एक वर्ष : 240 रुपए

एकमुश्त सहयोग : इच्छानुसार

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

**ONLINE TRANSFER / UPI**

**STATE BANK OF INDIA**

Anil Kumar Jaiswal

**S/A no-** 20155811729

**Ifsc code** SBIN0005943

Mobile number associated with account 9810556533

**PAYTM : 7982014609**
**PHONEPE : 9810556533**
**GOOGLE PAY : 9810556533**
**ANIL JAISWAL**


संपादक : अनिल जायसवाल

9810556533, 7982014609

email : **payasmagazine@gmail.com**

# ‘पायस’ जिसका नाम

**कितनी** प्यारी बाल पत्रिका
‘पायस’ जिसका नाम।
पायस कहते हैं खीर को,
वैसा इसका काम।

तरह-तरह के ज्ञान की बातें
पढ़ने को मिल जाती।
मम्मी, नानी भी तो पढ़कर,
इसको समय बिताती।

भाई-बहन सब बड़े चाव से,
‘पायस’ पढ़ते रहते।
इसको पढ़कर अपना सुंदर,
जीवन गढ़ते रहते।

पढ़ें पत्रिका बच्चों की हम,
जिससे मिलता ज्ञान।
ज्ञान प्राप्त कर के बच्चे ही,
बनते सदा महान।।

## अपने लेखक को जानिए

**गिरीश पंकज :** गिरीश जी अनेक विधाओं में लिखते हैं। लगभग सौ पुस्तकें छप चुकी हैं। बच्चों के लिए नाटक, कहानी और कविताएं भी लिखते रहे हैं। उनके प्रकाशित बाल साहित्य की संख्या सात है।

# पर्यावरण स्वस्थ है तो जीवन है

अनिल जायसवाल

**हमने** इस धरती के पर्यावरण को इतना नुकसान पहुंचाया है कि उसकी भरपाई कुछ सालों में करना अब असंभव है। लेकिन अभी भी चेतकर हम इस धरती को रहने लायक तो बना ही सकते हैं। अपने किए की भरपाई करने का अब यही समय है। नहीं तो आने वाले समय में इस धरती पर ना तो पेड़-पौधे होंगे, ना जीव जंतु। जब धरती बनी थी, तो इसका वातावरण ऐसा था कि हर तरह के जीवन को यहां पनपने का अवसर मिलता था।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस दशक यानी 2021 से 2030 में इस धरती के इको सिस्टम को रीस्टोर करना अपना लक्ष्य बनाया है। इस कार्य के द्वारा इको सिस्टम को ठीक करके या कुछ हद तक कमियों को दूर करके लोगों के जीवन को सुखी बनाना प्रमुख लक्ष्य है। इसके लिए खास कर इन क्षेत्रों का चुना गया है।

## खेती की जमीन

धरती के इको सिस्टम का एक प्रमुख हिस्सा है खेती की जमीन। धरती पर उपलब्ध जमीन का एक तिहाई हिस्सा खेती की जमीन है। इस जमीन पर उपजा अन्न से धरती के प्राणियों को भोजन प्राप्त होता है, जीव-जंतु पलते हैं और कीड़े-मकोड़ों को भी उनके हिस्से का खाना मिलता है। इन्हीं जमीन के साथ की जमीनों पर हम पेड़-पौधे लगाकर फल-फूल प्राप्त करते हैं, जिससे जीवन चलता है। परंतु समय के साथ हमने खेती की जमीन को भी बर्बाद करना शुरू कर दिया है। रासायनिक खाद और ज्यादा उपज के लालच में जमीन का दोहन इसकी उर्वरता को कम कर रही है। फसलों को कीड़ों से बचाने के लिए जिन दवाओं का उपयोग होता है, उनसे खेती पर निर्भर जानवर और कीट-पतंगों की दुनिया खत्म होती जा रही है।

आज वैज्ञानिक ऐसे खाद विकसित कर रहे हैं जिनसे न मिट्टी को कोई हानि पहुंचेगी और ना फसलों पर निर्भर जीव-जंतु और कीट मरेंगे। बस, हमें अपनी लालच को छोड़कर प्रकृति का ध्यान रखते हुए प्रकृति से सब सामान प्राप्त करना सीखना होगा।

## साफ पानी

साफ पानी के स्रोत हमें पीने के लिए पानी, खाने के लिए सामान के साथ-साथ ऊर्जा भी प्रदान करता है। इन साफ पानी के स्रोतों के आसपास ही मानव सभ्यता विकसित हुई थी और मनुष्य ने ढंग से रहना और जीना सीखा था। फिर मनुष्य ने अपने जीवनदाता, पानी के स्रोत, नदियों को ही बर्बाद करना शुरू कर दिया।

नदियों का हमने इतना दोहन किया कि नदी के अंदर के जीवन और जीव-जंतुओं को हमने खत्म होने की कगार पर पहुंचा दिया। जिस तरह हम लोगों की अपनी जीवनशैली होती है, वैसे ही नदियों में भी पूरा एक जीवन चक्र चलता है। इनमें वनस्पतियां, तरह-तरह की मछलियां और पानी के जीव पाए जाते हैं। परंतु इन नदियों में प्रदूषित जल, कारखानों का कचरा, शहरों का कचरा बहाकर, प्लास्टिक और गटर का गंदा पानी इन नदियों में डालकर हमने नदी के जीवों को समाप्त कर दिया।

आज जरूरत है कि हम साफ पानी के स्रोतों की रक्षा करें और नदियों को प्रदूषित होने से बचाएं। नदी के जीव-जंतु पनपेंगे, तो इको सिस्टम फिर से काम करेगा। नदिया साफ होंगी, तो उसका पानी भी साफ होगा। इससे भूजल का स्तर सुधरेगा और पानी से होने वाली बीमारियां भी खत्म होंगी। हमें फिर से दलदल वाले स्थान या वेटलैंड का निर्माण करना होगा, ताकि वे धरती के संतुलन को बनाए रखें।

## जंगल

इस दुनिया को चलाने में जंगल का बहुत बड़ा हाथ होता है। धरती पर रहने के लिए ऑक्सीजन की जरूरत होती है और केवल एक अमेजन का जंगल पूरी दुनिया के लिए करीब एक चौथाई ऑक्सीजन का उत्पादन करता है। जंगलों के पेड़-पौधे हमें लकड़ी, फल-फूल के अलावा इस धरती पर संतुलन बनाए रखने के लिए विभिन्न जंगली जानवरों को आश्रय देता है।

परंतु हम इनसान अपनी लालच में आकर जंगलों को भी बर्बाद करने से नहीं पीछे हटे। आज हम हर साल जंगल के जंगल साफ कर देते हैं और इसका असर इस धरती के वातावरण पर पड़ता है। दुनिया की बढ़ती जनसंख्या का सबसे ज्यादा दबाव जंगलों पर ही पड़ता है, क्योंकि धरती पर रहने के लिए जब जमीन कम पड़ने लगती है, तो इनसान की नजर हरे-भरे जंगलों पर ही पड़ती है और अपने रहने के लिए जंगल की कटाई शुरू कर देता है, हजारों प्रजातियों के जंगली-जानवर अब तक इस अंधाधुंध कटाई की भेंट चढ़ चुके हैं। पेड़-पौधों की कटाई के कारण जमीन की पकड़ भी ढीली हुई है, जिसके कारण बाढ़ का खतरा बढ़ गया है। पेड़ों की कमी होने से ऑक्सीजन की कमी होने लगी है और धरती का वातावरण पहले के मुकाबले अधिक गरम हो रहा है। पेड़-पौधे कम होने से बारिश पर भी असर पड़ा है। इन सबका असर घूम-फिरकर मनुष्य पर ही पड़ा है।

आज जरूरत है कि शहरों को बसाने के बदले हम जंगलों को बचाएं। जो जंगल उजड़ गए हैं, उन्हें फिर से हरा-भरा करें ताकि जमीन पर मिट्टी की पकड़ मजबूत हो। कीट-पतंगों और जंगली जानवरों को उनके घर वापस मिलें। जब हरियाली होगी तो गरमी भी कम होगी, बरसात ज्यादा होगी और इससे धरती को रहने के लिए संतुलित बनाने में मदद मिलेगी।

## पहाड़

दुनिया में उपलब्ध जमीन का एक चौथाई हिस्सा पहाड़ हैं। इन पहाड़ों का दुनिया को संतुलित करने में बहुत बड़ा हाथ है। बरसात के अलावा पीने के पानी के लिए भी हम पहाड़ों पर ही निर्भर रहते हैं। अधिकांश नदियां पहाड़ों से ही निकलती हैं। पहाड़ों पर अनेक प्रकार के जीव-जंतु पाए जाते हैं जो अपनेआप में दुर्लभ हैं।

अब इनसानों ने पहाड़ों को भी बर्बाद कर दिया है। हिल स्टेशन या धार्मिक स्थल को विकसित करने के नाम पर पहाड़ों को काट-काटकर मानव बस्तियां बनाई गईं। वहां के वातावरण के प्रतिकूल सामान का उपयोग कर घर बने। इन बस्तियों को बसाने के लिए पहाड़ों पर सुप्त अवस्था में पड़ी बरसाती नदियों को भी उजाड़ दिया गया।

लेकिन प्रकृति किसी से नहीं डरती है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण केदारनाथ आपदा है। जब बादल फटने से पानी का रेला आया और उसे जब अपना प्राकृतिक रास्ता ना मिला, तो उसने पहाड़ी बरसाती नालों और नदियों पर बसाई गई बस्तियां उजाड़ दी। तब लोगों को पता चला कि इन बरसाती नालों या नदियों का क्या महत्व होता है।

हमें मानना होगा कि पहाड़ बचेंगे, तो इनसान भी बचेंगे। पहाड़ के इको सिस्टम को दोबारा जीवित करके कटे पेड़ों के बदले में पेड़ लगाकर, नदियों के प्राकृतिक रास्तों को फिर से आबाद करके, बरसाती नालों के जगह से मकानों को हटाकर बाढ़ और भूस्खलन को रोका जा सकता है। खेती के तरीके फिर से पहाड़ के अनुकूल बनाने होंगे।

## घास के मैदान

पूरी दुनिया में घास के मैदान हैं, जो धरती के वातावरण को एक संतुलन प्रदान करते हैं। बड़े-बड़े जंगली जानवर जैसे हिरन, शेर, गैंडे, सांप और कई तरह के पक्षी घास के मैदान में ही रहना पसंद करते हैं। यहां वे अपने शिकार को आराम से देख सकते हैं। अगर शाकाहारी हैं, तो उन्हें खाने के लिए घास की कमी नहीं होती और मांसाहारी हैं, तो बड़े आराम से शिकार कर अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं। आज जंगल के नाम पर हम अभ्यारण्य में घूमने जाते हैं, तो वे एक तरह से ग्रास लैंड ही हैं।

समय के साथ घास के मैदान पूरी दुनिया में कम होते जा रहे हैं, जिसका असर जंगली-जानवरों पर ज्यादा पड़ रहा है। वे घने जंगल में जाने के बदले ग्रामीण इलाकों में घुस रहे हैं। अपना शिकार तलाशते हैं। इससे मनुष्य और जानवरों में संघर्ष बढ़ रहा है। बहुत जगह घास के मैदान साफ कर वहां खेती शुरू हो गई। इसके कारण जानवर बेघर हो गए और उन्होंने इनसानों को अपना आहार बनाने का प्रयास करना शुरू कर दिया। घास के मैदानों में लगे पेड़ कट गए, जिनके कारण चिड़ियों का बसेरा खत्म हो गया।

आज हमें यह समझना होगा कि बिना जीव-जंतुओं के, मनुष्य का इस धरती पर रहना संभव नहीं। जीव-जंतुओं का बसेरा यानी घास के मैदानों वाले जंगल को दोबारा विकसित करना एक बहुत बड़ी जरूरत है। हमें मानना होगा कि ये घास के मैदान हमारे नहीं, उन पर सिर्फ पशु-पक्षियों का ही अधिकार है।

## समुद्र

धरती का 70 प्रतिशत भाग पानी है और इसका 90 से ज्यादा प्रतिशत भाग समुद्र के रूप में है। इसी से हम सोच सकते हैं कि इस दुनिया के ठीक से संचालन में समुद्र की कितनी बड़ी भूमिका है। यह समुद्र पहले हमें एक जगह से दूसरी जगह जाने का रास्ता देता था। अपनी संपदा से खनिज, गैस, तेल और खाना देकर मनुष्यों की जरूरतों को पूरा करता था।

परंतु आज हमने अपनी लालच में आकर समुद्र को अनदेखा कर दिया है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण समुद्र का जल स्तर बढ़ता जा रहा है और कई प्रसिद्ध शहर और यहां तक की देश दुनिया के नक्शे से मिटने को तैयार हैं। समुद्र का एक बड़ा हिस्सा प्लास्टिक के कचरे से बर्बाद हो रहा है और यह कचरा समुद्री जीवों को नष्ट करता जा रहा है। अभी-अभी जापान ने घोषणा की है कि वह अपने परमाणु संयंत्र का रेडियो धर्मी पानी समुद्र में डालेगा।

जब तक हम समुद्र को दुहते रहेंगे, इस संसार को बर्बाद होने से नहीं रोक सकते। हमें यह समझना होगा कि इस संसार में जितने तरह की जैविक संसाधन हैं, जीवन है उससे कम समुद्र में नहीं है। समुद्री जीवन को बर्बाद करके हम कैसे आबाद हो सकते हैं?

आज जरूरत है कि हम समुद्र की एक बच्चे की तरह देखभाल करें, उसे प्रदूषित होने से बचाएं।

## शहरी क्षेत्र

यह जानकर तुम्हें आश्चर्य होगा कि धरती के जमीन में सिर्फ 1 प्रतिशत जमीन शहरी क्षेत्र में है। परंतु संसार की आधी आबादी इन्हीं 1 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में रहती है। इससे इस क्षेत्र पर बहुत दबाव है। भीड़भाड़, कंक्रीट के घर, बेतरतीब यातायात, अंधाधुंध जंगलों की सफाई कर अपने रहने के लिए घर बनाना, उपलब्ध से ज्यादा पानी, लकड़ी, हवा का इस्तेमाल करने की कोशिश, यह सब मिलाकर हम शहरी क्षेत्र को बर्बादी की तरफ धकेल रहे हैं। शहरों में रहना अब दूभर होता जा रहा है। ना पीने का पानी है, ना पेड़ हैं, ना खुली जमीन है, ना बारिश है, कंक्रीट के घरों में रहना अब दूभर होता जा रहा है। और इन सब के लिए जिम्मेदार हम ही हैं। हमने इकोसिस्टम को बर्बाद कर दिया है। अपने लिए ज्यादा से ज्यादा स्थान पाने के लालच में हमने शहर में उपलब्ध थोड़े-बहुत पेड़ों को भी काटकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी।

आज शहरों को रहने लायक बनाने की सबसे ज्यादा जरूरत है हर इलाके में जो भी खाली जमीन है, वहां पेड़ उगाने की जरूरत है। जिन तालाबों को पाट दिया गया, उन्हें फिर से जीवित करना होगा। रेन वाटर हार्वेस्टिंग से भूजल का स्तर बढ़ेगा और गरमी भी कम करने में मदद मिलेगी।

सच यह है अब बात बनाने का नहीं एक्शन लेने का समय है। अब यह हम सबकी जिम्मेदारी है कि इस दुनिया को फिर से रहने लायक बनाएं।

इसके लिए सबसे जरूरी है पर्यावरण की देखभाल। हम अपने आसपास खाली पड़ी जमीन को हरियाली से भर सकते हैं। अपने खानपान में बदलाव लाकर भी पर्यावरण को सुधार सकते हैं। जो पेड़-पौधे हमारे आसपास हैं, उनकी देखभाल कर सकते हैं। यह सब करना असंभव नहीं है, बस करने की इच्छा शक्ति होनी चाहिए।

# भोला भाई के बिस्कुट

**कुप्पू** को सर्दियां पसंद हैं। सर्दियां आती हैं तो, मूंगफलियां भी आती हैं। खूब भुनी करारी मूंगफलियां। जेब में भरो और मजे में कुड़-कुड़ खाते रहो। अहा, क्या मजे का स्वाद है!

और सिर्फ मूंगफलियां ही क्यों? सर्दियों की एक खास चीज और पसंद है कुप्पू को। सो जैसे ही सर्दियां आती हैं, उसके मुंह से बार-बार निकलता है, "मम्मी, चाय-बिस्कुट...!"

"हां कुप्पू, लाऊंगी तेरी पसंद के बिस्कुट!" मम्मी हंसकर कहती हैं और फिर अपने काम में लग जाती हैं। पर भला अपने लाड़ले कुप्पू की फरमाइश वे कैसे भूल सकती हैं?

मम्मी ने कुप्पू के लिए तरह-तरह के बिस्कुट खरीदे। पर जब वह खाने बैठता है, तो मन ही मन कहता है, 'इसमें वो बात नहीं।' उसने मम्मी से भी कहा, "मम्मी...मम्मी, इसमें वो बात नहीं!"

मम्मी हैरान होकर बोलीं, "कुप्पू, तू क्या कह रहा है? मेरी समझ में तो कुछ नहीं आता। आखिर इसमें क्या बात नहीं है?"

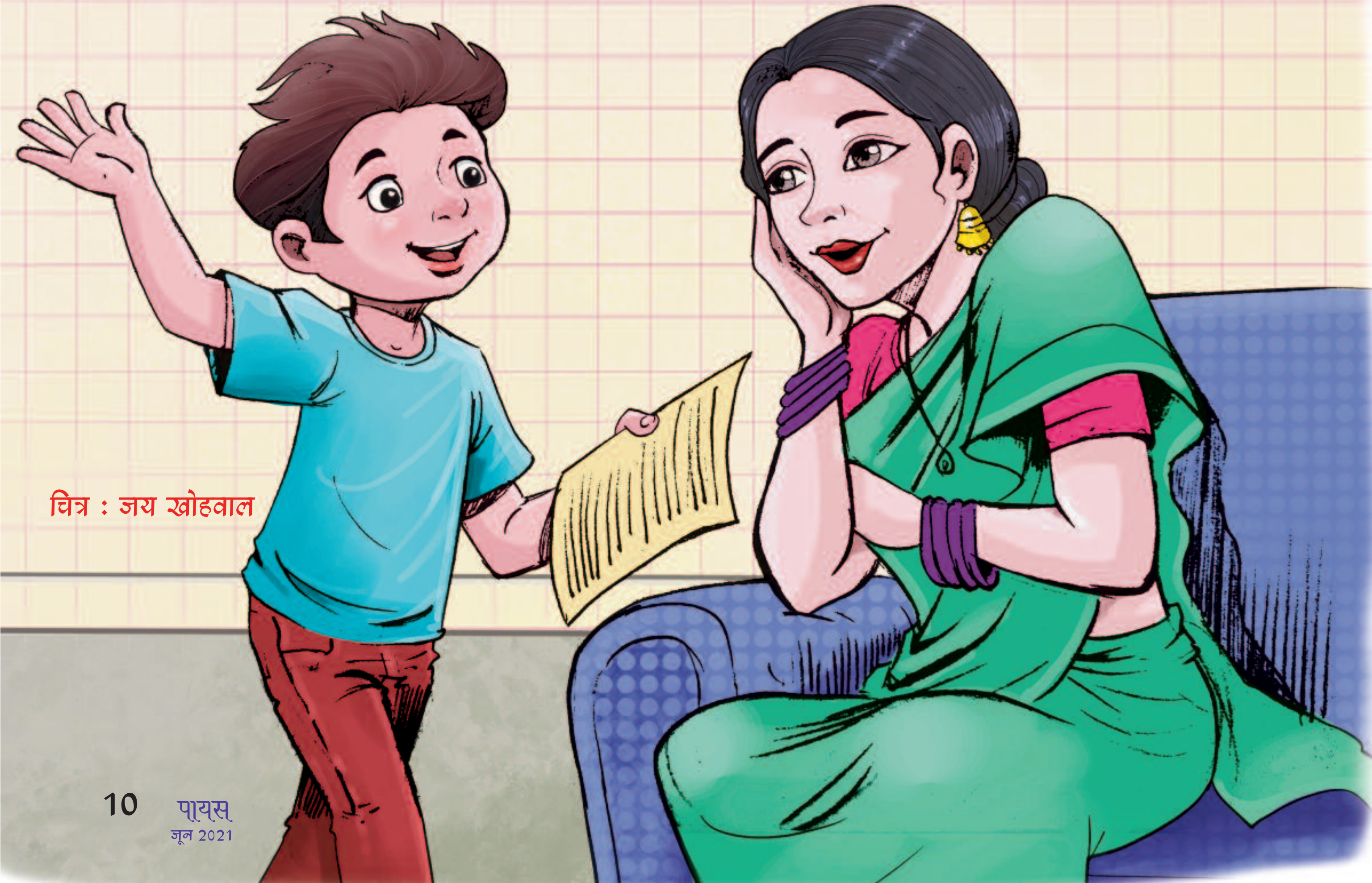

चित्र : जय खोहवाल

कुप्पू एक क्षण रुककर कुछ सोचने लगा। फिर बोला, "मम्मी, एक बार आप बेकरी में खुद जाकर बनवाकर लाई थीं न नमकीन और मीठे बिस्कुट। वे बड़े कुरकुरे और अनोखे थे।"

"बुद्धू, वह बेकरी तो अब हमारे घर से बहुत दूर चली गई है। रामनगर में! मैं कहां बार-बार जाकर बनवाकर ला सकती हूं?" मम्मी थोड़ी खीज गईं।

"तो मम्मी, मैं चला जाऊंगा।" कुप्पू झिझकता हुआ बोला।

"तू? इतनी दूर...!" मम्मी को हैरानी हुई।

"क्यों नहीं, मम्मी? बस, आप मुझे एक बार दिखा दो।" कुप्पू ने जिद पकड़ ली।

मम्मी समझ गईं, अब तो कुछ न कुछ करना होगा। वरना कुप्पू की जिद, राम बचाए!

उन्होंने उसी दिन एक बड़े से टिन में आटा, घी और दूसरा सामान लिया। फिर कुप्पू के साथ रिक्शा पर बैठकर रामनगर गईं।

वहां भोला भाई बेकरी वाले की दुकान थी। दुकान पर बाहर ही भोला भाई दिख गए। खूब मस्त मौला। चेहरे पर चौड़ी मुसकान। कुप्पू की मम्मी को देखकर बोले, "अरे बहन जी, इस बार तो आप बहुत दिनों में आई हैं।...क्या आप भूल गईं भोला भाई के बिस्कुट?"

कुप्पू की मम्मी ने हंसकर कहा, "न...न, भोला भाई, भूल कैसे सकती हूं? मगर घर के जो तमाम काम रहते हैं। फिर हमारे घर से रामनगर दूर भी है। इस बार भी शायद न आ पाती, पर कुप्पू ने तो जिद ठान ली कि मम्मी, मम्मी, मुझे तो वही बिस्कुट खाने हैं। वे खूब करारे थे। और आप जो दूसरे बिस्कुट लाती हो, उनमें वो बात नहीं!"

सुनकर भोला भाई हंसने लगे। खुश होकर बोले, "वाह! यह तो मेरी जीत हो गई बहन जी!"

कुछ देर बाद उन्होंने कहा, "देखो बहन जी, बच्चा यह नहीं जानता कि बेकरी कितनी दूर है। या कि कितनी मुश्किल आएगी।...बच्चा तो सिर्फ यह जानता है कि इसका स्वाद बड़ा अच्छा है। यही तो मैं चाहता था।..."

थोड़ी देर में ही भोला भाई बेकरी वाले ने कुप्पू की मम्मी को खूब सारे कुरकुरे बिस्कुट बनाकर दिए। नमकीन भी, मीठे भी। टिन पूरा भर

गया। ऊपर तक। फिर रिक्शा वाले से कहा, "कुप्पू और उसकी मम्मी को आराम से घर पर छोड़ दो। देखना, इन्हें कोई तकलीफ न हो।"

कुप्पू को इतनी खुशी हो रही थी कि उसकी खुदर-खुदर हंसी रुक नहीं पा रही थी।

रिक्शा चलने वाला था। पर तभी भोला भाई अंदर गए। कांच की एक साफ धुली प्लेट लेकर आए। उसमें दो बिस्कुट मीठे, दो नमकीन रखकर कहा, "अगर कुप्पू यहीं चखकर इन्हें पास कर दे, तो भोला भाई का जी खुश हो जाएगा।"

कुप्पू का तो मन कर ही रहा था बिस्कुट खाने को। उसने झटपट बिस्कुट खाए और मजे में सिर हिलाता हुआ बोला, "वाह भोला भाई, क्या कहने...! बिस्कुट बहुत स्वाद...कुरकुरे हैं!"

"यानी बिस्कुट पास...?" भोला भाई ने आंखें चमकाते हुए पूछा।

"पास! फर्स्ट क्लास फर्स्ट...!" कुप्पू हंसा, तो उसकी मम्मी भी हंस दीं और साथ ही भोला भाई भी। रिक्शा वाला भी हंस रहा था।

भोला भाई को कुछ याद आया। फौरन अंदर गए, एक प्लेट में चार बिस्कुट लाकर रिक्शा वाले को भी पकड़ा दिए। बोले, "भोला भाई की दुकान पर आया है, तो जरा उनके बिस्कुट का स्वाद तो तू भी देख ले ना!"

रिक्शा वाला रामलुभाया खुश। हंसते-हंसते बोला, "भोला भाई बेकरी वाले को हमारा जयहिंद!"

भोला भाई की दुकान बेकरी में काम करने वाले कारीगर भी खुश

## अपने लेखक को जानिए

**प्रकाश मनु** : सुप्रसिद्ध साहित्यकार, संपादक और बच्चों के प्रिय लेखक। लगभग ढाई दशकों तक बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका 'नंदन' के संपादन से जुड़े रहे। बाल साहित्य की सौ से अधिक पुस्तकें। बाल कविता का इतिहास भी लिखा। प्रसिद्ध साहित्यकारों के संस्मरण, आत्मकथा तथा बाल साहित्य से जुड़ी कुछ बड़ी योजनाओं पर काम कर रहे हैं।

थे। उनमें एक बड़ा ही हंसमुख कारीगर संतू भी था। उसे कुप्पू बहुत अच्छा लगा। बोला, "कुप्पू, फिर आना। तुम्हारे आने से तो पूरी बेकरी चहकने लगी। हम सबका दिल खुश हो गया।"

जब वे चलने लगे, तो भोला भाई ने कहा, "सुनिए बहन जी, अगर आपको यहां आने में दिक्कत हो, तो मैं संतू को भेज दिया करूंगा। हर महीने की पहली तारीख को यह आपके पास आ जाया करेगा। आप सामान दे दें। वह बिस्कुट बनवाकर खुद ही घर पर छोड़ आएगा, ताकि हमारा कुप्पू खुश रहे!"

सुनकर कुप्पू के चेहरे पर मुसकान आ गई। उसकी मम्मी भी खुश होकर बोलीं, "वाह भोला भाई, ऐसा हो जाए, तो बहुत अच्छा है!"

अगले दिन सुबह-सुबह कुप्पू ने खूब मजे लेकर चाय के साथ कुरकुरे बिस्कुट खाए। घर में सभी को वे अच्छे लगे, पर कुप्पू को सबसे ज्यादा।

और अब तो भोला भाई हर महीने दो बड़े-बड़े टिन भरकर बिस्कुट भिजवाने लगे थे। एक में मीठे, एक में नमकीन। पूरी सर्दियों भर कुप्पू ने खूब खाए कुरकुरे बिस्कुट, फिर एक दिन बिस्कुट खाते-खाते ही कविता बनाई। खूब कुरकुरी कविता, कुरकुरे बिस्कुटों जैसी। और मजे-मजे में उसे गाने लगा-

***खाए मैंने***
***खूब कुरकुरे बिस्कुट खाए,***
***झटपट-झटपट***
***चटपट-चटपट***
***खाए जी, खाए***
***मैंने जी भर बिस्कुट खाए!***
***खाए नन्ही चिड़िया ने भी***
***छिटपुट-छिटपुट,***
***खाकर बोली-***
***टी वी टुट-टुट...***
***आहा, आहा, कितने अच्छे,***
***भोला भाई के ये बिस्कुट!***

मम्मी ने कुप्पू की यह कविता सुनी, तो वे खूब हंसीं। बोलीं, "अगली बार भोला भाई की बेकरी में चलेंगे, तो उन्हें भी सुनाना। सुनकर वे खूब खुश होंगे!"

सुनकर कुप्पू भी मुसकराने लगा। फिर बोला, "मम्मी, मैं यह कविता एक पन्ने पर लाल, नीले, हरे कलर्स से लिख लेता हूं। इस बार भोला भाई की बेकरी पर चलेंगे, तो जहां वह बैठते हैं, उसी दीवार पर टेप से चिपका देंगे। फिर तो भोला भाई के साथ-साथ सब आने-जाने वाले भी पढ़ लेंगे।"

"वेरी गुड। यह हुई न बात!" कहकर मम्मी ने प्यार से कुप्पू की पीठ थपथपा दी।

# पिंजरा और पेड़

मुझे परिंदों की चहचहाहट
बहुत प्रिय थी
सो मैंने एक बड़ा-सा
पिंजरा बनवाया
जिसे हरा रंगवाया
फिर दाना-पानी के लिए
सुंदर बाटकियाँ लाया
फिर रंग-बिरंगे परिंदे खरीदे
एक से एक।

इस तरह मैंने
अपने घर की बालकनी में ही
परिंदों का एक संसार बसाया
उनका कलरव
मुझे बेहद सुकून देता था।

परिंदों की चहचहाहट
उसे भी बहुत प्रिय थी
उसे भी उनका कलरव
अलौकिक संगीत लगता था।

पर उसने परिंदे नहीं खरीदे
पिंजरा नहीं बनवाया
अपने घर के अहाते में
एक पेड़ लगाया।

## अपने लेखक को जानिए

**विनोद पदरज :**
शिक्षा : एम. ए. इतिहास
कुल तीन कविता संग्रह प्रकाशित
1. कोई तो रंग है
2. अगन जल
3. देस
दो संग्रह, 'आंधी में झाड़ू' और 'वे सदा ही अनचाही आईं संसार में' शीघ्र प्रकाश्य।
प्रौढ़ शिक्षा के लिए भी सृजन।

1 जून : ग्लोबल डे फॉर पेरेंट्स

# परिवार जरूरी है

**अधिकांश** बच्चे अपने माता-पिता यानी पेरेंट्स के साथ ही रहते हैं। ऐसे में पेरेंट्स डे मनाने की क्या जरूरत? यह सवाल तुम्हारे दिमाग में भी आता होगा।

तो बच्चों, बहुत बार किसी चीज के प्रति तुम्हारा ध्यान आकर्षित करने के लिए भी सरकार या संस्था किसी विशेष दिन कोई उत्सव का आयोजन करती है। उस दिन हम सब उस खास चीज, रिश्ता या दिन को विशेष रूप से याद करते हैं ताकि उनके प्रति हम अपनी जिम्मेदारी को याद कर सकें।

माता-पिता और बच्चे का रिश्ता सबसे प्यारा होता है। माता-पिता यानी पेरेंट्स के लिए उनके बच्चे से बढ़कर कोई नहीं होता। पर इसको हम ऐसे सोचें कि बच्चे जब बड़े होते हैं तब भी बच्चे और माता-पिता के बीच रिश्ता क्या ऐसा ही रहता है? यानी क्या बच्चों के लिए भी पेरेंट्स से बढ़कर कोई नहीं होता, हम क्या ऐसा कह सकते हैं?

### क्यों मनाते हैं पेरेंट्स डे?

1980 के बाद संयुक्त राष्ट्र ने महसूस किया कि इस दुनिया में परिवार बिखरते जा रहे हैं। यानी जॉइंट फैमिली (संयुक्त परिवार जिसमें दादा-दादी, माता-पिता, चाचा चाची और सबके बच्चे एक साथ रहते हैं) का कंसेप्ट बदल रहा है और लोग न्यूक्लियर फैमिली (एकल परिवार यानी केवल माता-पिता और बच्चे) की तरफ बढ़ रहे हैं या अकेले रहना पसंद कर रहे हैं। ऐसे में संयुक्त राष्ट्र को लगा कि परिवार पहले है। तब 1984 में 'इंटरनेशनल ईयर ऑफ द फैमिली' मनाया। फिर 'इंटरनेशनल डे ऑफ फैमिलीज' का आयोजन किया गया।

बच्चों के लालन-पालन में माता-पिता की महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए 2012 में निर्णय लिया गया कि हर साल 1 जून को 'ग्लोबल डे फॉर पेरेंट्स' के रूप में मनाया जाएगा।

### क्यों जरूरत पड़ी पेरेंट्स डे की

छोटे परिवार और काम के तनाव का सबसे ज्यादा असर बच्चों पर पड़ता है। बच्चों को अतिरिक्त देखभाल की जरूरत पड़ती है। गरीबी, भुखमरी और काम में माता-पिता के व्यस्त रहने का सबसे खराब असर बच्चों पर पड़ता है। यह सब मानते हैं कि एक बच्चे के संपूर्ण विकास में सबसे बड़ा रोल उसके परिवार का होता है। अगर बच्चे पारिवारिक वातावरण में, खुशी के माहौल में प्यार के बीच बड़े होते हैं, तो उनका अच्छा विकास होता है। ऐसे पेरेंट्स के सम्मान में ही इस दिन को मनाया जाता है।

चित्र क्रेडिट : गूगल

## जरा इन देशों को देखें

पिछले दिनों आंकलन किया गया कि किन देशों में माता-पिता अपने बच्चों का ज्यादा अच्छे तरीके से ध्यान रखते हैं या यूं कहें कि किन देशों में बच्चों का लालन-पालन ज्यादा बेहतर तरीके से होता है। इस लिस्ट में प्रथम दस देशों में किसी एशियाई देश का नाम नहीं था। इनमें 7 यूरोपीय देश थे, नंबर एक पर डेनमार्क, दो पर स्वीडन, तीन पर नार्वे, चार नीदरलैंड्स, पांच पर फिनलैंड और छह पर स्विट्जरलैंड और दसवें पर ऑस्ट्रिया। इनके अलावा पांचवे नंबर पर कनाडा, आठवें पर न्यूजीलैंड और नौवें नंबर पर ऑस्ट्रेलिया था।

अगर ध्यान से देखें, तो जो देश इस विश्व को हर तरह से प्रभावित करते हैं, वहां के पेरेंट्स इस लिस्ट में कहीं नहीं है। चाहे अमेरिका हो या इंग्लैंड, फ्रांस, इटली, जापान, चीन, रूस या फिर भारत ही क्यों न हों। ये देश प्रगति करने की चाह या दुनिया पर प्रभुत्व जमाने की चाह में इतने उलझे हैं कि यहां के लोग अपने बच्चों की ठीक से देखभाल नहीं कर पा रहे हैं। यहां परिवार टूट रहा है और बच्चों के लिए माता-पिता कम समय निकाल पा रहे हैं।

अकूत संपत्ति वाले खाड़ी के देशों का भी रेकार्ड इस मामले में खराब है। वहां तो स्त्रियों की ही हालत बहुत अच्छी नहीं है। ऐसे में वहां के बच्चों की हालत अच्छी कैसे हो सकती है?

इसका जो खतरनाक असर होता है, वह यह है कि आज के जिन बच्चों की ठीक से देखभाल नहीं हो पा रही है, क्या वे बड़े होकर अच्छे पेरेंट्स बनेंगे?

ऐसी स्थिति से बचने के लिए ही आज नौकरी करने वाले पेरेंट्स को कुछ अतिरिक्त सुविधाएं दी जाती हैं, ताकि वे बच्चों की देखभाल ठीक से कर सकें।

इसीलिए संयुक्त राष्ट्र इस तरह के आयोजन करके लोगों में जागरुकता लाना चाहता है। इस अभियान के द्वारा वे उन पेरेंट्स का भी सम्मान करते हैं, जो हर अभाव व तकलीफ में भी अपना सब कुछ बच्चों पर न्यौछावर कर उन्हें हर सुविधा प्रदान करना चाहते हैं, ताकि ये बच्चे बड़े होकर एक अच्छा नागरिक बने।

बच्चों के प्रति माता-पिता के कर्तव्य होते हैं, तो बच्चों को भी अपने माता-पिता का ध्यान रखना चाहिए। तुम्हें भी कोशिश करनी चाहिए कि अपने माता-पिता को कम से कम तनाव देकर उनके जीवन को भी आसान बनाओ।

## पेरेंट्स डे के बहाने

बच्चों की देखभाल करना दुनिया के सबसे कठिन कामों में से एक है। यह तब और मुश्किल हो जाता है, जब घर में बड़े बुजुर्ग न हों। अगर माता-पिता दोनों वर्किंग हों, और बच्चे बहुत छोटे हों, तो उनकी तो करीब-करीब शामत सी आ जाती है। तुम में से बहुत से बच्चों ने अपने माता-पिता को काम के साथ-साथ तुम्हारी देखभाल के लिए उन्हें परेशान होते देखा होगा।

संयुक्त राष्ट्र इतना चाहता है कि बच्चे अपने माता-पिता की कुर्बानियों को इस खास दिन पर याद करें और उन्हें प्यार देकर उनका सम्मान करें। बच्चे समझें कि उनका ठीक से विकास करने के लिए उनके माता-पिता ने कैसे अपने सपनों को, उनपर न्योछावर कर दिया।

इस साल संयुक्त राष्ट्र पेरेंट्स के प्रति विशेष आभार प्रकट कर रहा है। इस कोरोना संकट के समय अपने बच्चों को इस संक्रमण से बचाते हुए कई पेरेंट्स अपनी नौकरी कर रहे हैं। ऐसे पेरेंट्स अपनी जान सिर्फ इसलिए जोखिम में डाल रहे हैं, ताकि उनके बच्चे सुरक्षित रह सकें ✪

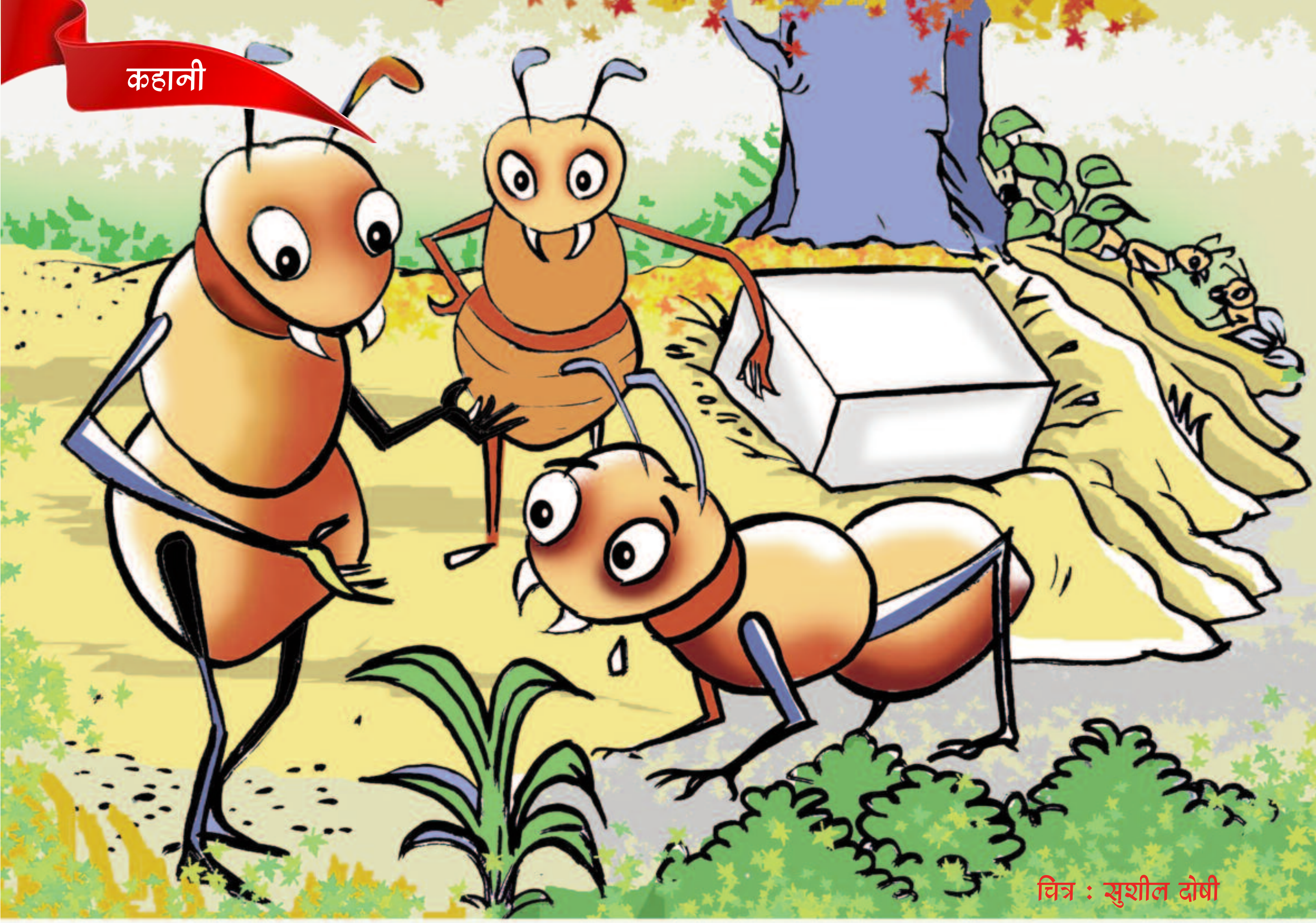

चित्र : सुशील दोषी

# बल और बुद्धि

एकत्रित किया हुआ भोजन समाप्त होने को था। अतः चीटियों ने भोजन की खोज में निकलने का निर्णय लिया।

रात ढलते ही सभी चीटियां एक साथ कतार में निकल पड़ीं। वे एक के पीछे एक चल रहीं थीं। उनमें दो सैनिक चीटियां सबसे आगे चल रहीं थीं। वास्तव में इन्हीं दो सैनिक चीटियों ने यह सूचना दी थी कि पास की रसोई घर से मिठाई बनने की महक आ रही है। इस सूचना से सभी चीटियों में खुशी की लहर दौड़ गई। उन चीटियों ने यह भी बताया कि वहां ढेर सारी मिठाई होने की संभावना है। सभी चीटियां खुशी खुशी उस ओर बढ़ रहीं थीं।

चींटियों के झुंड में चिंटू सबसे छोटी और नासमझ थी। इसलिए उसकी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा गया था। वह कतार के बीच में चल रही थी। अपने नटखट स्वभाव के कारण वह बीच-बीच में कतार से अलग हो जाती और इधर-उधर भाग जाती थी।

उसकी इस हरकत पर बड़ी चीटियों ने समझाया, "तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। भोजन की खोज में पहली बार घर से बाहर निकली हो। इसलिए भटक जाने का अंदेशा है।" लेकिन चिंटू ने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया और धीरे-धीरे कतार में पीछे होती चली गई।

बहुत दूर तक चलने के बाद वह कतार के सबसे पीछे हो गई। अब तो वह निर्भय होकर इधर-उधर भाग रही थी।

तभी अचानक, चीटियों में खलबली मच गई। चिंटू चींटी आसपास दिखाई नहीं दे रही थी। वह कतार के सबसे पीछे भी नहीं थी!

सभी चीटियां चिंतित हो उठीं। चिंटू की मां भय से रोने लगी। कतार में उपस्थित सैनिक चीटियों को यह आदेश दिया गया कि वह चिंटू की

खोज करें। चार-पांच सैनिक चीटियां उसकी खोज में निकल पड़ीं। वे आसपास सभी ओर, चिंटू को खोज रहीं थीं। लेकिन चिंटू का कहीं कोई पता ना था।

अचानक कुछ दूरी से चिंटू की चीख सुनाई दी। सैनिक चीटियां उस ओर दौड़ीं। उन्होंने देखा कि चिंटू चींटी शक्कर के बड़े से दाने के नीचे दबी हुई है और कराह रही है। सभी सैनिक चीटियों ने मिलकर शक्कर के दाने को हटाया और चिंटू को बाहर निकाला। वह लगातार रो रही थी। उसे शक्कर के दाने के भार से चोट लग गई थी और चल भी नहीं पा रही थी।

अब सैनिक चीटियां उसे उठाकर चीटियों की भीड़ की ओर ले गईं। भीड़ में पहुंचते ही वह अपनी मां से लिपट गई और जोर-जोर से रोने लगी।

कुछ देर बाद, जब चिंटू चींटी चुप हुई, तो उसकी मां ने उससे भटक जाने का कारण पूछा। चिंटू दुखी होकर बोली, "कतार में चलते हुए मुझे, शक्कर का बहुत बड़ा दाना दिखाई दिया। मैंने सोचा, दाने को उठाकर लाऊंगी और सब को आश्चर्यचकित कर दूंगी। मुझे खूब शाबाशी मिलेगी।"

चिंटू की मां उसकी बातें सुनकर मुसकराई और समझाया, "मेरी नादान बेटी, अति उत्साह में कोई काम नहीं करना चाहिए। ऐसा काम तो बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए, जो आपकी शारीरिक क्षमता से अधिक हो। शक्कर का दाना आपकी क्षमता से भी बहुत बड़ा था। हम चीटियां अपने वजन से ज्यादा, बहुत ज्यादा उठा सकती हैं। परंतु उस बड़े दाने को उठाना आपके लिए बिल्कुल भी संभव नहीं था। यही आपकी गलती है। तभी आपको चोट लग गई। ऐसे काम में बल का नहीं, बुद्धि का प्रयोग करना चाहिए था। चार चींटियों का सहयोग लेने से ऐसे काम आसानी से हो जाते हैं। अब आगे से याद रखना।"

सहमति में सिर हिलाते हुए चिंटू चींटी अपनी मां से लिपट गई। ✪

## अपने लेखक को जानिए

**राकेश सोहम्** : व्यंग्यकार/प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में स्फुट प्रकाशन। दूरदर्शन व आकाशवाणी से प्रसारण। बाल रचनाकार, प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका और अखबार के लिए स्तम्भ लेखन। क्षितिज की ओर' और 'अनकहे अहसास' में कविताएं संकलित। दूरदर्शन से प्रसारित धारावाहिक की कुछ कड़ियों का लेखन। 21वीं सदी के सर्वश्रेष्ठ 131 व्यंग्यकार में शामिल।

## अपने भीतर के लेखक को उड़ने के लिए खुला आसमान दें

- अपनी रचना को दूसरों के सामने लाने के लिए, अपनी कहानी, कविता या लेख को पी.डी एफ. फार्मेट में किताब या पत्रिका के रूप में दुनिया के सामने लाएं।
- आप केवल लिखें। बाकी सब हम पर छोड़ दें।
- ब्लैक एंड ह्वाइट या रंगीन चित्र भी बनवाने की सुविधा है।
- संपादन में 25 वर्षों का अनुभव

संपर्क करें

अनिल जायसवाल
9810556533 7982014609
akjaiswal2592@gmail.com

ANIL JAISWAL

Jais Features

akjaiswal2592@gmail.com
9810556533
7982014609

हिंदी में किसी भी प्रकार की, खास तौर पर बच्चों के लिए प्रकाशन सामग्री या कार्य के लिए संपर्क करें. प्रूफ रीडिंग, संपादन, संकलन, टाइपिंग, मैगजीन सेटिंग, डिजाइनिंग, पी.डी. फार्मेट में पत्रिका या ई. पत्रिका निकालने की सुविधा भी उपलब्ध है.

नंदन बाल पत्रिका में संपादन का 25 वर्षों का अनुभव

# पेड़ लगाओ

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ॥

यदि ये पेड़ काटते जाओगे,
तो फल-फूल कहाँ से पाओगे।
न चहचहाएँगे पक्षी घर में,
ताजी हवा कहाँ से लाओगे।

धरती का ये विनाश हुआ है,
इसकी तुम भरपाई कराओ।
पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ॥

वृक्ष जीवन में लाते खुशियाँ,
ऑक्सीजन का भंडार हैं ये।
मानव के हैं जीवन-रक्षक,
जानवरों के घर-बार हैं ये।

अमूल्य-संपदा पेड़ हमारी,
औषध के भरे-भंडार हैं ये।
बाढ़-तूफान से हमें बचाते,
पेड़ लगा हरियाली लाओ।

पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ।

## अपने लेखक को जानिए

**उमेश चंद्र सिरसवारी :** केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा में संपादन सहायक और अतिथि प्रवक्ता। साहित्य साधना में लीन। बाल सहित्य सहित शोध आलेख और आलोचना पर विशेष ध्यान। हाल ही में 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ' द्वारा 'कृष्ण विनायक फड़के बाल साहत्यि समीक्षा सम्मान'। तीन पुस्तकें प्रकाशित।

# चले गए धरती पुत्र

**इस** इस पृथ्वी पर हम सब जन्म लेते हैं, जीते हैं और जीवन पूर्ण होने पर धरती छोड़कर चले जाते हैं। इस जीवन चक्र में बहुत कम लोग होते हैं, जो इस धरती का कर्ज उतारकर जाते हैं। ऐसे ही धरती पुत्र थे, सुंदरलाल बहुगुणा।

चिपको आंदोलन शुरू करने वाले कुछ प्रमुख लोगों में से एक सुंदरलाल बहुगुणा का जन्म 9 जनवरी सन 1927 को उत्तराखंड के मरोडा में हुआ। गांव में ही प्राथमिक शिक्षा पूरी की। आगे की पढ़ाई उन्होंने लाहौर जाकर की।1949 में ठक्कर बाप्पा से मिलने के बाद सुंदरलाल दलित विद्यार्थियों के उत्थान के लिए काम करने लगे।

सुंदरलाल बहुगुणा
(09-01-1927 से 21-5-2021)

जब शादी की बारी आई, तो सुंदरलाल बहुगुणा ने विमला नौटियाल से पहले ही कह दिया था कि शादी के बाद दोनों गांवों में रहकर गांववालों की सेवा करेंगे।

1970 के उत्तराखंड में पेड़ों की कटाई बढ़ गई। तब सुंदरलाल बहुगुणा ने इसका विरोध किया। उन्होंने पेड़ों की कटाई के विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया। उनका नारा था

*क्या हैं जंगल के उपकार, मिट्टी, पानी और बयार।*
*मिट्टी, पानी और बयार, जिन्दा रहने के आधार।*

उनका कहना था, आज पेड़ों की कटाई के बदले पेड़ों का संरक्षण और नए पेड़ लगाना महत्त्वपूर्ण है। यह आंदोलन पूरे देश में फैला। जब ठेकेदार पेड़ काटने आते गांव की स्त्रियां पेड़ों से चिपककर खड़ी हो जातीं।

कई साल तक चले आंदोलन के बाद 1980 में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने उत्तर प्रदेश के हिमालयी वनों में वृक्षों की कटाई पर 15 वर्षों के लिए रोक लगा दी। भारत में 1980 का वन संरक्षण अधिनियम और केंद्र सरकार में पर्यावरण मंत्रालय का गठन भी चिपको आंदोलन की वजह से ही संभव हो पाया।

सुंदरलाल बहुगुणा सन् 1978 में जब गोमुख में ग्लेशियरों को पीछे हटते देखा, तो वहीं हिमालय और जल संरक्षण का संकल्प ले लिया। भविष्य में जल संकट के खतरों को उन्होंने भांप लिया था। धान की खेती में बहुत पानी की जरूरत होती हैं, इसलिए उन्होंने चावल का त्याग कर दिया।

उनका मानना था कि पानी को बचाने के लिए खान-पान की जीवन शैली में बदलाव की जरूरत है। उन्हें इस बात का दुख था कि इनसान पानी के इस्तेमाल को लेकर कतई संवेदनशील नहीं हैं।

जब टिहरी बांध की योजना बनी, तो उन्होंने उसका विरोध किया। हाईकोर्ट में उन्होंने खुद ग्रामीणों का पक्ष रखा था। आखिर तक उन्होंने इस प्रोजेक्ट का विरोध किया। इस डैम के भेंट चढ़े गांवों में बहुगुणा जी की अपना गांव भी था।

कोविड के कारण उनकी मृत्यु 21 मई 2021 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में हुई। उन्हें ढेरों पुरस्कार और सम्मान मिले, पर वह जीवन भर धरती पुत्र बनकर हिमालय की गोद में रहे और उसकी भलाई के लिए कार्य करते रहे। ✪

# जूते गायब

मोनू बंदर बहुत बेवकूफ था। मगर अपनेआप को बहुत होशियार समझता था। वह नंदनवन में एक दफ्तर में काम करता था। वह रोज सुबह की ट्रेन से नंदनवन जाता और शाम की ट्रेन से घर लौट आता था।

उसकी एक बुरी आदत थी। ट्रेन में नीचे वाली सीट खाली रहने पर भी वह हमेशा ऊपर वाली सीट पर चढ़कर बैठता था, वह भी जूतों सहित। इस वजह से उसकी रोज किसी न किसी यात्री से बक झक हो जाती थी।

रोज की तरह एक दिन वह जूते पहने ही उपर वाली सीट पर चढ़कर बैठ गया। जूतों में लगी मिट्टी नीचे वाली सीट पर बैठे शेर सिंह के सिर पर गिरने लगी। इस पर शेरसिंह ने गुस्से से कहा, "अरे, बेवकूफ हो क्या? तुम्हें दिखाई नहीं देता है क्या? पैरों से जूते उतारकर नीचे रखो, नहीं तो अभी तुम्हें उठाकर खिड़की से बाहर फेंक दूंगा।"

शेरसिंह की धमकी सुनकर मोनू बंदर डर गया। उसने जल्दी से जूते पैरों से निकालकर पंखे के उपर रख दिया।

तभी ट्रेन एक स्टेशन पर रुकी। यात्रियों का रेला डिब्बे के अंदर घुस आया। नीचे की सीट भर गई। कुछ यात्री ऊपर चढ़कर बैठ गए।

एक लंगूर मोनू बंदर के बगल में

चित्र : इंदिरा

बैठ गया। वह मोनू से इधर-उधर की बातें करने लगा। मगर मोनू को उसकी बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह मोबाइल निकालकर गेम खेलने लगा।

तभी अगला स्टेशन आ गया। मोनू का ध्यान मोबाइल में लगा देख, लंगूर उसके जूते लेकर फुर्ती से नीचे उतर गया। मोनू को पता भी नहीं चला।

नंदनवन आया, तो मोनू नीचे उतरने लगा। उसने जूते लेने के लिए पंखे की तरफ अपना हाथ बढ़ाया। उसके दोनों जूते गायब थे।

"अरे, मेरे जूते कहां गए!" वह बुरी तरह चौंकता हुआ बोला, "कहीं ट्रेन के झटके से जूते नीचे तो नहीं गिर गए।" वह जल्दी से नीचे उतरकर जूते खोजने लगा।

जूते वहां होते, तब तो मिलते। जूते तो लंगूर लेकर गायब हो गया था। तभी ट्रेन सीटी देकर सरकने लगी। यह देखकर मोनू घबराकर प्लेटफार्म पर कूद गया। मगर कूदते ही वह लड़खड़ा गया। वह मुंह के बल गिर पड़ा।

उसके हाथ-पांव छिल गए। खून बहने लगा। तभी कुली बंटी गधे ने फुर्ती से आगे बढ़ कर उसे सहारा दे कर उठाया।

"चलती ट्रेन से नीचे कूदना बहुत खतरनाक होता है।" बंटी गधे ने कहा, "शुक्र मनाओ, तुम ट्रेन के नीचे जाने से बच गए। "

"कोई मेरे जूते लेकर ट्रेन से नीचे उतर गया था, उसी को देखने के लिए मैं कूद गया।" मोनू दर्द से कराता हुआ बोला।

बंटी गधे ने हैरानी से पूछा, "तुम्हारे जूते कैसे चुरा ले गया? क्या तुमने जूते अपने पैरों में नहीं पहन रखे थे?"

तब मोनू ने उसे सारी बात बताई। इस पर डंपी ने समझाते हुए कहा, "इसमें गलती तुम्हारी है। अगर तुम नीचे वाली सीट पर बैठते तो तुम्हें जूते अपने पैरों से नहीं निकालना पड़ता। पैरों से कोई जूते कैसे निकालता।"

"तुम ठीक कहते हो भाई, अब मैं कभी ऐसी गलती नहीं करूंगा।" मोनू ने दुखी होकर कहा और नंगे पैर दफ्तर की तरफ चल दिया। ✪

## अपने लेखक को जानिए

**हेमंत यादव** : सुपरिचित बाल साहित्यकार। राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाओं में, विभिन्न विधाओं में सैकड़ों रचनाएं प्रकाशित। 36 वर्षों से नियमित लेखन। साहित्यिक संस्था इंद्रधनुष साहित्य परिषद का उपाध्यक्ष तथा बिहार बाल मंच का अध्यक्ष। अखिल भारतीय हिंदी सेवी संस्थान, इलाहाबाद, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, बिहार, से सम्मानित।

पायस **अपना योगदान दें**

**बच्चों को ध्यान में रखकर पायस का प्रकाशन रंगीन चित्रों के साथ आप सबके सहयोग से हो पा रहा है।**

**रचना ही नहीं,**
**आर्थिक योगदान देकर भी**
**इस प्रयास में सहयोगी बनें**

# परिवार की मदद करो

तुम रोज देखते होगे, सुबह से शाम तक मम्मी तुम्हारे लिए दौड़ती रहती हैं। कभी स्कूल के कपड़े तैयार करना, तो कभी लंच पैक करना। स्कूल बस तक छोड़ना, फिर स्कूल से लौटने पर तुम्हारे बैग ठीक से रखना। तुम्हें खाना निकालकर देना या खिलाना, तुम्हें किसी तरह सुलाना, बाद में ट्यूशन तक छोड़ना। न जाने कितने काम हैं, जो मम्मी करती रहती हैं और तुम्हें पता भी नहीं चलता।

परेशानी तब होती है, जब मम्मी बीमार पड़ जाती हैं। तो हम क्यों न मम्मी का हाथ बटाएं। उनके काम में इस तरह सहायता करें कि उन्हें कोई काम बोझ ही न लगे और न किसी टेंशन में वह बीमार हों।

## परिवार के साथ समय बिताओ

हमेशा तुम कंप्यूटर या गेम्स में लगे रहोगे, तो अपने मम्मी-पापा का प्यार कैसे पाओगे? इसलिए जब भी मौका मिले, पापा-मम्मी के संग खेलो। मम्मी इनडोर गेम्स में आपका साथ दे सकती हैं। इससे तुम्हारे साथ मम्मी भी फिट रहेंगी। पापा के साथ साइकिल चला सकते हो। उन्हें भी साइकिल चलाने के लिए कहकर उनको फिट रखने में तुम मदद कर सकते हो।

## अपने सामान की देखभाल करो

रोज जब तुम्हें खेलने जाना होता है या किसी दोस्त की पार्टी में जाना होता है, तो तुम्हारा चिल्लाना शुरू हो जाता होगा, 'मम्मी, मेरे कपड़े कहां

हैं ?', 'कपड़े प्रेस क्यों नहीं हैं ?', 'अरे, मेरे मोजे नहीं मिल रहे हैं।' ऐसी स्थिति आने ही क्यों दो ? अपने सामान को सही जगह पर रखो। ताकि जब भी तुम्हें जरूरत हो, उन्हें ढूंढ़ने की जरूरत न पड़े।

## स्कूल की रात को ही तैयार कर लो

बहुत बार ऐसा होता है कि रात को टीवी देखकर या फिर गेम खेलकर तुम बिना बैग ठीक किए सो जाते हो। फिर सुबह फटाफट बैग तैयार करते समय कभी कोई किताब नहीं मिलती, तो कभी यूनिफार्म से बेल्ट गायब होती है। ऐसे में तुम्हारे पेरेंट्स भी तुम्हारे साथ परेशान होते हैं। इसलिए अच्छा यही है कि रात को बैग तैयार कर लो। अपनी यूनिफार्म प्रेस करके या करवाकर हैंगर में टांग दो।

## भाई-बहन को पढ़ा सकते हो

तुम्हें कितनी खुशी मिलती है, जब पेरेंट्स-टीचर मीटिंग में टीचर तुम्हारी तारीफ करते हुए कहते हैं, यह पढ़ने में बहुत बढ़िया है। तुम अगर सचमुच पढ़ने में बढ़िया हो, तो अपना ज्ञान अपने छोटे भाई-बहनों तक पहुंचाओ। वे जो आजकल पढ़ रहे होंगे, उन्हें तुम पढ़ चुके होगे। ऐसे में तुम आराम से अपने छोटे भाई-बहनों का मार्गदर्शन कर सकते हो। इससे मम्मी-पापा को कितना आराम हो जाएगा, तुम इसकी कल्पना नहीं कर सकते।

## जो मम्मी बना दें, प्यार से खाओ

मम्मी घर में हमेशा वैसी ही चीज पकाने का प्रयास करती होंगी, जो तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए अच्छी हो। परंतु तुम्हें तो शायद फास्ट फूड ज्यादा पसंद होगा। ऐसे में अक्सर मम्मी से तुम्हारी लड़ाई हो जाती होगी, स्कूल टिफिन या लंच के पीछे। पर यह ठीक नहीं। फास्ट फूड हफ्ते में एक दिन तो खाया जा सकता है, पर उसे खाने की रूटीन में मत डालो। मम्मी जो बना दें, उसे प्यार से खाओ। देखना, थोड़े दिनों में तुम्हें उनकी सारी डिश अच्छी लगने लगेंगी। तुम बीच-बीच में मम्मी से कहकर अपनी पसंद की डिश भी बनवा सकते हो।

इसके अलावा पौधों को पानी देना, मेहमान आएं, तो उनके लिए पानी लाना आदि छोटे-मोटे काम तो तुम आसानी से अपने हाथ में ले सकते हो। फिर देखना, मम्मी-पापा तुमसे कितने खुश होते हैं और सब तरफ तुम्हारी तारीफ ही तारीफ होगी।

चित्र क्रेडिट : गूगल

# छोटा सा पैकेट

उस दिन भी नगरपालिका से आई हुई गाड़ी ने अपना सुपरिचित गीत-

स्वच्छ भारत का इरादा कर लिया हमने
देश से अपने ये वादा कर लिया हमने।
मेरे दिल से आई आवाज
स्वच्छ भारत होगा अपना आज
आओ, कचरा लाओ, कचरा लाओ

बजाते हुए महावीर नगर के घर-घर से कचरा इकट्ठा किया और फिर उसे ठिकाने लगाने के लिए शहर से बाहर सुनसान इलाके की ओर चल पड़ी। तेज धूप पड़ रही थी। गाड़ी रास्ते में एक बरगद के पेड़ की झूलती डालियों से टकरा गई और जिससे उस गाड़ी का थोड़ा कचरा निकलकर सड़क पर गिर गया।

वहीं से दो बच्चियां गुजर रही थीं, भोली और बबली। उनकी नजर गाड़ी से गिरे हुए कचरे पर पड़ी। उसे देखकर दोनों ठिठककर वहीं खड़ी हो गईं क्योंकि उस कचरे में कुछ रंगीन सामान था–जैसे रंगीन रैपर्स, गुब्बारे तथा रंग-बिरंगी टोपियां।

दोनों बच्चियां गरीब थीं। उनके घर में ऐसा सामान कभी नहीं आया था, अतः वे कचरे के पास गईं और उन्होंने कचरे में से दो टोपियां उठा लीं। फिर दोनों बड़े शौक से बारी-बारी उन्हे पहनकर देखने लगीं।

तभी उनकी नजर कचरे में पड़े एक छोटे से पैकेट पर पड़ी। दोनों ने लपककर उस पैकेट को उठा लिया और उत्सुकता से उसे देखने लगी। वह शायद कोई गिफ्ट था, जो गलती से कचरे में आ गया था। उसे पाकर वे बहुत खुश हुईं और उसे लेकर जल्दी से अपने घर चली गईं।

घर पहुंचते ही उन्होंने वह पैकेट खोला। उस पैकेट के अंदर रंग-बिरंगी चूड़ियां थीं। बिल्कुल उन्हीं के नाप की। वे चूड़ियां कुछ खास लगतीं थीं। उन्होंने पहले कभी इतनी सुंदर चूड़ियां नहीं देखीं थीं। दोनों बहनों ने आधी-आधी चूड़ियां बांट लीं और फिर उन्हें अपने हाथों में पहनकर देखने लगीं।

पहनने के बाद फिर वे कभी उन्हें हिलाकर देखतीं, कभी उन्हें बजाकर देखतीं। इस तरह वे दोनों बहुत खुश हो रही थीं कि उनकी मां आ गईं।

चित्र : जय खोहवाल

"क्या कर रही हो तुम दोनों?" उन्होंने पूछा और फिर उनके हाथों में नई और सुंदर चूड़ियां देखकर वह आश्चर्यचकित रह गईं और फिर पूछा, "ये चूड़ियां कहां से लाईं?"

मां की बात सुनकर भोली और बबली डर गईं। उन्होंने सोचा, यदि हम मां को कहेंगे कि कचरे में से उठाकर लाए हैं तो वह नाराज होंगी। अतः बबली ने कह दिया, "किसी ने दी है। वह सबको बांट रहे थे, सो हमने भी ले लीं। अच्छी है ना?"

"हां, बहुत अच्छी हैं।" मां ने कहा और अपने काम में लग गईं।

भोली और बबली की मां कपड़े प्रेस करके अपनी रोजी-रोटी कमाती थी। अभी भी उसे बहुत से कपड़े प्रेस करने थे। शाम तक उन्होंने सभी कपड़े प्रेस कर लिए। फिर उन्हें छांट कर अलग गठरियों में बांध दिया। फिर एक गठरी भोली और बबली को पकड़ाती हुई बोलीं, "जाओ, ये लाल बंगले में दे आओ।"

"हां मां, जाती हैं।" कहकर दोनों बहने अपने सिर पर वह कपड़ों की गठरी रखकर लाल वाले बंगले की ओर चल पड़ीं।

वहां पहुंचकर बबली ने आवाज लगाई। उसकी आवाज सुनकर घर के अंदर से एक लड़की निकलकर आई, उनकी ही हमउम्र।

"लाओ मुझे दे दो।" उसने बबली और भोली से कहा। भोली ने कपड़ों की गठरी उस लड़की की ओर बढ़ाई जिसका नाम श्रिया था। गठरी लेते वक्त श्रिया की नजर भोली के हाथों पर पड़ी और वह चौक उठी।

'अरे! यह तो वही चूड़ियां हैं, जो पापा लाए थे और मैंने इन्हें अपनी सहेली को गिफ्ट भी कर दिया था। परंतु उसका फोन आया था कि उसे चूड़ियां नहीं मिलीं। ये इनके पास कहां से आईं? मतलब इन दोनों ने ये चूड़ियां चुराई हैं।' यह सोचकर वह भोली और बबली से बोली, "तुम दोनों यहीं रुको। मैं मम्मी को बुलाती हूं। तुमसे कुछ बात करनी है।"

श्रिया के हाव-भाव और चूड़ियों पर उसकी नजर देखकर दोनों का माथा ठनका। उन्हें लगा, जरूर इसकी मम्मी आकर चूड़ियों की विषय में ही पूछेंगी। अतः वे दोनों डर के मारे वहां से भागकर अपने घर आ गईं।

जब श्रिया बाहर आई, तो उसने देखा दोनों नहीं हैं। उसे लगा कि जरूर दाल में कुछ काला है, तभी वे भागी हैं। अतः वह अपनी मम्मी को लेकर उनके घर पहुंच गई।

श्रिया ने वहां जाकर भोली और बबली की मां से बोली, "आंटी, आपकी बेटियों ने मेरी सहेली की चूड़ियां चोरी की हैं।"

"ये उसकी चूड़ियां कैसे चोरी करेंगी? ये तो उसे जानती भी नहीं।"

"ये उनके घर भी तो प्रेस के कपड़े देने जाती होंगी। मौका मिलते ही उठा लाई होंगी।" श्रिया की मम्मी ने अनुमान लगाकर बोला।

भोली और बबली की मां ने आंखें तरेरकर बच्चों पूछा, "सच बताओ, ये चूड़ियां कहां से आईं?"

दोनों डर के मारे रोते-रोते बोलीं, "मां, हमने चोरी नहीं की। हां, झूठ जरूर बोला है। यह चूड़ियां हमें किसी ने दी नहीं, यह हमें कचरे में से मिली थीं।" यह कहकर दोनों ने सारी घटना सुनाते हुए वह रैपर और डिब्बा भी दिखाया जिसे खोलकर उन्होंने चूड़ियां निकाली थीं।

यह देखकर श्रिया की मम्मी बोली, "श्रिया, यह हो सकता है कि तुम्हारी फ्रेंड ने तुम्हारा गिफ्ट अन्य रैपर्स के साथ गलती से कचरे में फेंक दिया हो और वह संयोगवश इन्हें मिल गया। अब मुझे भी यही लग रहा है कि इन लड़कियों ने चोरी नहीं की।"

इतनी ही देर में भोली और बबली अपने हाथों से चूड़ियां उतार चुकी थीं और उन्हें वापस उसी डिब्बे में रखकर तथा गिफ्ट पेपर में लपेटकर श्रिया की ओर बढ़ाते हुए बोलीं, "यह अपनी चूड़ियां वापस ले लो, मगर यह मत कहो हमने चोरी की है।"

भोली और बबली की बात सुनकर श्रिया और उसकी मम्मी बहुत शर्मिंदा हुईं।

तब श्रिया की मम्मी बोलीं, "नहीं अब हम यह चूड़ियां वापस नहीं लेंगे। इसे हमारी ओर से तुम दोनों के लिए उपहार समझो। हां, अब तुम सबको शान से यह कह भी सकती हो यह चूड़ियां हमें किसी ने दी हैं।"

यह कहकर वे वापस चलीं गईं। भोली और बबली ने फिर से वह चूड़ियां पहन लीं।

## रचनाकार को जानिए


**कुसुम अग्रवाल** : जन्म राजस्थान में हुआ तथा शिक्षा दीक्षा पंजाब में। दिल्ली में रहकर लिखना शुरू किया। करीब 35 सालों से साहित्य सृजन में संलग्न। देशभर की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशन। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत तथा अन्य कई प्रकाशनों द्वारा पुस्तकों का प्रकाशन।

# आओ बनाएं गौरैया के लिए घर

तुम बहुत से पक्षियों को उनकी विशेषताओं से जानते होगे। उनके रंग, उड़ने की कला, खान-पान और उनकी बहुत ही प्यारी-'चीं-चीं', 'चिक-चिक' भी पसंद होंगी।

एक प्यारी-सी चिड़िया गौरैया को भी तुमने देखा ही होगा। हमारी नादानियों से अब इनकी संख्या बहुत कम रह गई है। मसलन पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, कच्चे घरों का पक्के घरों में बदल जाना, तेजी से शहरीकरण, भयानक प्रदूषण, उनके लिए दाने और पानी की उचित व्यवस्था न होना...। तुम्हें मालूम है, गौरैया एक घरेलू पक्षी है। यह बागों, और जंगलों में रहना पसंद नहीं करती। इसके घर हमारे आस-पास होते हैं और यह ताख, दीवार में रह गई कोई खाली जगह, खपरैल, छप्पर, आदि के नीचे स्थानों पर बहुत मजे से अपने घर बनाती है। और हां, अगर तुमने उसके लिए कोई जगह बनाई है, तो ये उसमें भी बहुत शौक से रहती है।

क्या तुम भी कुछ ऐसा नहीं करना चाहोगे कि इस पक्षी की गूंज हमेशा तुम्हारे घरों में बनी रहे और तुम कह सको, 'यह मेरी अपनी गौरैया है!'

चलो, इसके लिए बनाते हैं एक प्यारा-सा घर, जिसे देखकर गौरैया कह उठे-'वाह! यह घर तो बहुत सुंदर है, मैं तो यहीं रहूंगी!'

तो शुरू करते हैं। इसके लिए तुम्हें किसी बड़े की सहायता लेनी होगी। आवश्यक औजारों की मदद से दी गई नापों को काट लो। बस, बन जाएगा प्यारा-सा गौरैया का घर! ✪

## आवश्यक सामग्री :

1. दो सूत हार्ड-बोर्ड का एक टुकड़ा। ये तुम्हारे कबाड़-रूम से भी मिल सकता है।
2. एक आरी या दोहरे साइड वाला आरी ब्लेड।
3. रुखान नामक औजार या चौड़े मुंहवाले पेंचकस की नोंक घिसकर चाकू जैसीधर बना लो।
4. एक छोटी हथौड़ी।
5. आध इंच की कुछ कीलें और कपड़ेवाला रेगमाल।
6. हैंग करने के लिए शीशे टांगनेवाला हुक तथा उसी नाप के पेंच।
7. लकड़ी वाला प्राइमर 250 ग्राम, छोटा ब्रश तथा कई रंग के स्टेनर।
8. स्केल, पेंसिल।

## बनाने की विधि :

* नाप के अनुसार हार्ड-बोर्ड के टुकड़े काट लो।
* अब चिड़िया के जाने के स्थान को रुखान नामक औजार से गोल काट लो।
* रेगमाल से टुकड़ों की घिसाई करके चिकना कर लो।
* प्राइमर से एक कोट रंग चढ़ाओ। सूखने पर दोहरा कोट करो।
* अब साइड की दीवारें, छत, नीचे का हिस्सा आदि पर अपने मनचाहे रंग चढ़ाओ।
* सूखने पर आध इंच कील से इन्हें आपस में जोड़ दो।
* बन जाने के बाद उन्हीं रंगों का एक कोट और चढ़ाओ।

## बड़े घर के लिए नाप :

1. इस नाप से गत्ते या हार्ड-बोर्ड के टुकड़े काट लो-
2. बेस-16.5 x 16.5 सेमी.
3. दोनों साइड-17 x 14 सेमी; दो पीस
4. आगे-पीछे का हिस्सा-24.5 x 16 सेमी. के टुकड़े से चित्रानुसार काटें; दो पीस
5. छत का पहला टुकड़ा, थोड़ा बड़ा-18 x 16 सेमी.
6. छत का दूसरा टुकड़ा थोड़ा छोटा, पहले टुकड़े के नीचे से जुड़ेगा-18 x 15.5 सेमी.

## छोटे घर के लिए नाप:

1. बेस-16 x 14 सेमी.
2. दोनों साइड-12.5 x 10 सेमी.; दो पीस
3. आगे का हिस्सा-16.5 x 14 सेमी. के टुकड़े से चित्रानुसार काटें
4. पीछे का हिस्सा-17. x14 सेमी.
5. छत का पहला टुकड़ा, थोड़ा बड़ा- 16 x 12.5 सेमी.
6. छत का दूसरा टुकड़ा थोड़ा छोटा, पहले टुकड़े के नीचे से जुड़ेगा-16 x 11.5 सेमी.

## अपने लेखक को जानिए

**डॉ. मोहम्मद साजिद खान :** कॉलेज में अध्यापन के साथ-साथ लेखन भी। देश की लगभग सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में विगत 28 वर्षों से सक्रिय लेखन, कहानी, कविता, एकांकी, चित्र-पहेली, लघुकथा, साक्षात्कार, संस्मरण, समीक्षा, आदि की अब तक लगभग 600 रचनाएं प्रकाशित।

1.

2.

3.

4.

5.

6.

7.

8.

9.

# लौट आया बुद्धू

किसी गांव में बुद्धू नाम का एक लड़का रहता था। जैसा नाम वैसा काम। घर वाले करने को कुछ कहते, मगर वह कुछ और ही काम कर देता। माता-पिता उसे खूब डांटते। एक दिन तंग आकर बुद्धू घर से भाग गया। लेकिन भागने से पहले उसने अपने कुछ मित्रों से बोला, "अब अमीर होकर मैं घर लौटूंगा।"

बुद्धू पैदल ही शहर चला आया। दिन भर पैदल चलने के कारण उसे खूब भूख लग आई थी। लेकिन उसकी जेब में तो फूटी कौड़ी भी न थी। वह ललचाई नजरों से दुकान में रखी खाने-पीने वाली चीजों की ओर देखते हुए चला जा रहा था।

तभी एक भटूरे-छोले वाले ने उसे अपनी ओर ताकते हुए देखा, तो उसने पूछा लिया, "क्यों भई, कुछ खाना है?"

बुद्धू ने हां में सिर हिला दिया।

रेहड़ी वाले ने एक प्लेट भटूरे-छोले उसके सामने रख दिए। बुद्धू पलभर में ही खा गया। रेहड़ी वाले ने पूछा "और दूं?"

बुद्धू ने फिर 'हां' में सिर हिला दिया। अब बुद्धू दूसरी प्लेट भी डकार गया। ठंडा पानी पीकर जब वह चलने लगा, तो रेहड़ी वाले ने तमतमाकर कहा, "अरे,कहां चल दिए? पैसे नहीं देने क्या?"

"पैसे, कैसे पैसे?" बुद्धू ने हैरान होकर पूछा।

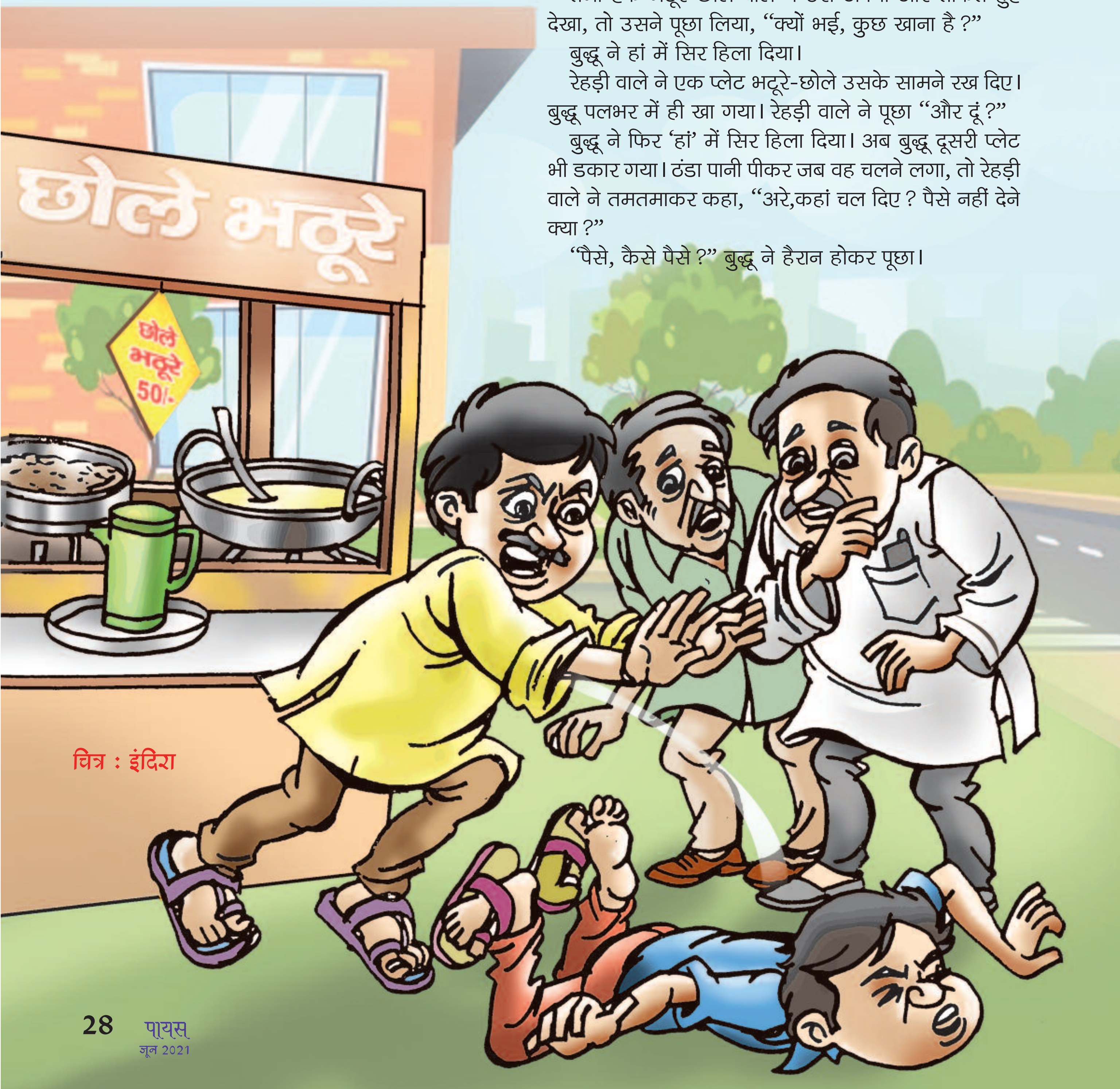


चित्र : इंदिरा

"क्यों, भटूर-छोले नहीं खाए?"

"तुम्हीं ने तो पूछा था खाने को, सो मैंने खा लिए।"

"खा लिए के बच्चे, पैसे निकाल।" रेहड़ी वाला गुस्से से चिल्लाया। मगर बुद्धू के पास पैसे होते, तब न। रेहड़ी वाले ने उसकी पिटाई करनी शुरू कर दी।

शीघ्र ही वहां भीड़ इकट्ठी हो गई। लोगों ने रेहड़ी वाले को समझाया कि बुद्धू को माफ कर दे। आखिरकार उसे बुद्धू को छोड़ना ही पड़ा क्योंकि वह स्वयं ही पीट-पीट कर थक गया था। बुद्धू का अंग-अंग दर्द कर रहा था।

अंधेरा घिर आया था। बुद्धू को कुछ सूझ नहीं रहा था कि कहां जाए। वह वहीं एक मकान के आगे थड़े पर लेट गया और न जाने कब उसकी आंख लग गई।

अगली सुबह वह हड़बड़ाकर उठ बैठा। कोई उसे झकझोर रहा था।

"क्या घोड़े बेचकर सोया है? दूध नहीं लेना क्या?" रामलाल दूध वाला उसे कह रहा था।"

"कैसा दूध?" बुद्धू ने हैरान होकर उसकी ओर देखा।

"तू कौन है? रामू कहां है?" दरअसल रामलाल उसे रामू समझ बैठा था। तभी पड़ोसी का एक लड़का बोल उठा, "अंकल, ये लोग शादी पर गए हैं। तीन दिन बाद आएंगे।"

रामलाल मुड़ने लगा, तो अनायास ही उसने बुद्धू से पूछ लिया कि वह क्या करता है। बुद्धू ने उसे सब कुछ सच-सच बता दिया।

रामलाल ने हंसते हुए कहा, "अगर तुम चाहो, तो मेरे पास काम कर सकते हो। रोटी-कपड़ा के साथ तीन सौ रुपए महीना मिलेंगे।"

अंधा क्या चाहे, दो आंखें। बुद्धू तुरंत मान गया। उसी दिन से वह रामलाल दूध वाले के यहां काम करने लगा। वह हर सुबह रामलाल के साथ लोगों के यहां दूध देने जाता।

रामलाल के यहां काम करते हुए बुद्धू को पंद्रह दिन के लगभग हो गए। एक दिन रामलाल बीमार पड़ गया। उसने बुद्धू से कहा, "आज सभी घरों में तुम्हें दूध देने जाना होगा। जो मैं कहता हूं, उसे ध्यान से सुन ले। हमारे पास दूध थोड़ा कम है। रास्ते में पास वाले कुएं से इसमें पानी मिला लेना, ताकि सभी घरों में बराबर दूध बांटा जा सके।"

बुद्धू ने हामी भर दी तथा साइकल पर दूध का डोल लादकर चलने लगा। न जाने वह किन ख्यालों में खोया हुआ था कि उसे पता ही नहीं चला कि कब पास वाला कुआं निकल गया। काफी आगे निकलकर जब उसे अपनी भूल का अहसास हुआ तो वह पीछे लौट आया। दूध में पानी मिलाकर जब वह शहर पहुंचा, तब तक दिन काफी चढ़ आया था। लोग उसे देखकर मारे क्रोध के तिलमिलाने लगे, "यह कौन सा समय है, तुम्हारे आने का! मालूम नहीं हमें ऑफिस भी जाना है।"

बुद्धू ने भी अकड़कर जवाब दिया, "इसमें मेरा क्या दोष? पानी मिलाना भूल गया था।"

"पानी मिलाना भूल गया था? किस में पानी मिलाना भूल गया था?" लोगों ने पूछा।

"दूध में, और भला किस में?" बुद्धू ने भोलेपन से कहा, "मालिक ने कहा था कि रास्ते में कुएं से पानी मिला लेना ताकि दूध बराबर बांटा जा सके, उसी में देर हो गई।"

मगर लोगों ने उसे पीटना शुरू कर दिया, "हमें पानी मिलाकर दूध बेचते हो। आने दो रामलाल को, उसे तो हम पुलिस के हवाले करेंगे।"

लोगों ने बुद्धू की साइकल भी छीन ली और जमकर पिटाई करके उसे वहां से भगा दिया।

बुद्धू रोता हुआ मालिक के पास पहुंचा तथा सारी घटना उसे कह सुनाई। रामलाल के तन-बदन को तो जैसे आग लग गई। उसने पास रखा हुआ लकड़ी का लट्ठ उठा लिया और बुद्धू की ओर दौड़ा।

चिल्लाता बुद्धू वहां से भागा। रामलाल उसके पीछे दौड़ा। मगर एक तो मोटे होने के कारण, दूसरे बुखार के कारण रामलाल भागकर उसे पकड़ न सका।

बुद्धू वहां से सरपट भागा। रास्ते में ईख के खेत के भीतर जाकर छुप गया। मारे भूख तथा प्यास के उसका बुरा हाल था। मगर फिर भी वह खेत में छिपा रहा, इस डर से कि कहीं रामलाल न आ जाए।

दिन ढलने पर बुद्धू अंधेरे में चलने लगा। तभी उसके चेहरे पर तेज रोशनी पड़ी। वह चौंक उठा।

"कौन है तू?" एक रोबदार आवाज सुनाई दी।

लेकिन बुद्धू के कुछ कह पाने से पहले ही एक और व्यक्ति बोल उठा, "घर से भागा हुआ लगता है। इसे अपने साथ ही ले चलते हैं।"

एक ने उसका बाजू पकड़ते हुए

## अपने लेखक को जानिए

**डॉ.फकीर चंद शुक्ला** : अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक तथा साहित्यकार। हिंदी तथा पंजाबी भाषा में इनकी 60 पुस्तकें प्रकाशित। विभिन्न राज्यों के 16 राज्य पुरस्कारों से सम्मानित। डॉ. शुक्ला का नाम 'वर्ल्डज हूज हू' अर्थात दुनिया की नामी गिरामी हस्तियों में सम्मिलित। हिन्दी तथा पंजाबी बाल साहित्य के लिए नेशनल अवार्ड से सम्मानित ।

कहा, "चल हमारे साथ।"

"कहां ?" बुद्धू ने सहमकर पूछा।

"जिधर हम कहते हैं उधर ही चलता चल, स्वयं ही पता चल जाएगा कि कहां जाकर क्या करना है।"

वास्तव में वे लोग चोर थे और कहीं से चोरी करके आ रहे थे। वे बुद्धू को अपने अड्डे पर ले गए।

बुद्धू को उनके साथ रहते हुए कुछ ही दिन हुए थे कि एक दिन उन्होंने एक सेठ के यहां चोरी करने का फैसला किया। वे बुद्धू को भी साथ ले गए। उन्होंने कोठी के पीछे से बुद्धू को छत पर चढ़ाकर कहा, "धीरे से कमरे में जाओ, जो भी वस्तु बढ़िया लगे, उसे उठा लाओ या मौका देखकर दरवाजा खोल देना।"

चोर बुद्धू को छत पर चढ़ाने के पश्चात इधर-उधर छिप गए।

बुद्धू धीरे-धीरे चलते हुए मकान के भीतर जा पहुंचा। कमरे में एक भरी भरकम वस्तु से बुद्धू का पांव टकरा गया। अंधेरे में ही उसने टटोल कर देखा एक बड़ा-सा ट्रंक था। बुद्धू ने सोचा कि अवश्य ही उसमें कीमती सामान होगा। वह उसे उठाने का प्रयास करने लगा। ट्रंक भारी था। बुद्धू उसे उठा नहीं पाया। वह खाली हाथ कैसे बाहर जाता, चोरों ने उसे जान से मारने की धमकी दी हुई थी।

बुद्धू कोई तरकीब सोच रहा था कि फिर किसी वस्तु से वह टकरा गया। असल में कोई व्यक्ति चारपाई पर सो रहा था। बुद्धू ने उसे झकझोरना शुरू कर दिया। वह व्यक्ति हड़बड़ाकर उठ बैठा। अंधेरे में एक आकृति को देखकर पहले तो घबराया लेकिन हिम्मत कर पूछा, "कौन हो तुम ?"

"मेरे बारे में बाद में पूछना, पहले यह ट्रंक मेरे सिर पर रखवा दे"। बुद्धू थोड़ा गुस्से में बोला।

मगर उस व्यक्ति ने 'चोर-चोर' का शोर मचाना शुरू कर दिया। बाहर खड़े चोरों ने जब यह शोर सुना, तो वे तुरंत वहां से नौ-दो ग्यारह हो गए।

घर वालों ने बुद्धू को पकड़कर पिटाई की। वे लोग तो उसे पुलिस के हवाले करना चाहते थे, मगर उसकी मूर्खता भरी कहानी सुनकर उसे पगला समझ कर छोड़ दिया।

वहां से छूटते ही बुद्धू सीधा अपने गांव भागा। 'इससे तो गांव ही कहीं बेहतर है। वहां डांट-फटकार ही मिलती थी, पिटाई तो नहीं होती थी'!

शायद ऐसे ही किसी बुद्धू के 'कारनामों' पर यह कहावत बनी हो, "लौट के बुद्धू घर को आए।" ✪

# नानी का गाँव

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

आई जो गर्मी की छुट्टी।
लिख भेजी नानी को चिट्ठी।।
जल्दी मामा जी को भेजो,
अमियाँ खानी खट्टी-मिट्ठी।।

नानी के घर बाग-बगीचे।
पेड़ बड़े पर फल हैं नीचे।।
सखा-सखी सब साथ में खेलें,
भागें-पकड़ें अँखियाँ मीचे।।

बंद पढ़ाई की सब टेंशन।
लगे खेल में अब अपना मन।।
नानी का घर स्वर्ग लगे है,
मिले दोस्त रोमी औ रंजन।।

लूडो, कैरम और कबड्डी।
जीते कोई कोई फिसड्डी।।
कार्टून मोबाइल भूल,
तैरें पोखर पहने चड्डी।।

मस्त पेड़ की छांव लगे है।
एक निराला ठांव लगे है।।
प्यारा गर्मी के मौसम में,
बस नानी का गांव लगे है।।

**अपने लेखक को जानिए**

**गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल' :** बीसीयों पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। साझा संकलनों में कविताएं और कहानियां प्रकाशित। अभी बलरामपुर, (उत्तर प्रदेश) में कर अधिकारी ।

# यूं मुसकराए

रात के करीब दस बज रहे थे। हमेशा की तरह अधिकतर घरों की बत्तियां बंद हो चुकी थीं। सोसायटी के प्ले एरिया में मध्यम रोशनी थी और वहां से कुछ आवाजें आ रही थीं।

वहां आड़ी पड़ी हुई छोटा भीम वाली स्कूटी ने आंसू बहाते हुए कहा, "ये जो बंटू है न, बड़ा केयरलेस है। उसकी आदतें मुझे जरा भी अच्छी नहीं लगतीं।"

"क्यूं क्या हुआ?" वहीं पास पड़े हुए रबर के जूतों ने पूछा।

जब मैं बाजार में एक शोरूम में साफ-सुथरी खड़ी थी, एक दिन बंटू अपने पापा के साथ शोरूम में आया। उसने मुझे देखा, तो जैसे लट्टू हो गया और अपने पापा से खूब जिद की और मुझे खरीदकर घर ले आया। थोड़े दिन तो मेरा खयाल रखा, पर अब तो मुझ पर धूल ही जमी रहती है। शाम को खेलने के समय ही उसे मेरी याद आती है तो यहां पार्क में ले आता है। थोड़ी देर मेरी सवारी करता है, फिर अपने दोस्तों संग मस्त हो जाता है। जाते समय उसे खयाल ही नहीं रहता कि मुझे भी घर पर लेकर जाए। अक्सर यहां अंधेरे में छोड़कर घर चला जाता है।"

"बस यही हाल हमारा भी है, रोहन ने अपने दोस्त के पास हमारे जैसे रबर के जूते देखे थे, वह भी अपने पापा से जिद करके हमें बारिश के समय मॉल से खरीद लाया। हमें पहनकर वह बरसात के खूब मजे लेता है, खुले मैदान में जाता है, तो वहां हम पर गीली मिट्टी चिपक जाती है, पर इसने कभी हमें धोया ही नहीं। अब वर्षा ऋतु तो बीत गई, सो उसे हमारी आवश्यकता ही नहीं शायद।"

हमें भी वह अक्सर यहां छोड़ जाता है और दो दिन तक भी संभालता नहीं। स्वयं स्पोर्ट्स शूज पहनकर आ जाता है।" रबर के जूतों की जोड़ी ने उदास स्वर में कहा।

तभी वहां पड़ा स्केट-बोर्ड बोला "मेरी तो हालत पतली कर रखी है

चित्र : जस खोहवाल

इस डेनियल ने।"

"वो कैसे?" स्कूटी और रबर के जूतों ने उससे पूछा।

मेरे बोर्ड के नीचे छोटे-छोटे पहिए लगे हैं। मेरा डिजाइन ऐसा है कि मुझे समतल सतह पर चलाया जाए, लेकिन डेनियल इस टाइल लगे ट्रैक पर स्वयं मेरे ऊपर चढ़कर आता है। मेरे पहिये तो खुरदरे हो ही चुके हैं, मेरे बोर्ड पर भी कभी-कभार रगड़ लग जाने से कहीं-कहीं मेरी लकड़ी छिल गई है और मेरी रंगत ही खराब हो गई है। यदि वह चाहे, तो मुझे अपने घर से हाथ में उठाकर ला सकता है और यहां पार्क में जो समतल जगह स्केटिंग के लिए बनी है, वहां चला सकता है। पर कौन उसे समझाए?"

"एक तरकीब है।" स्कूटी बोली।

"वो क्या?" स्केट बोर्ड और रबर के जूते एक साथ बोले।

"हम सब छुप जाते हैं, कल जब ये तीनों हमें ढूंढ़ने यहां पार्क में आएंगे, तो हम उन्हें मिलेंगे नहीं।"

"हम्म, फिर शायद उनकी अक्ल ठिकाने आए।"

अगले दिन बंटू, रोहन, डेनियल अपने दोस्तों के साथ प्ले एरिया में खेलने आए। बंटू कुछ ढूंढ़ते हुए बोला "कल मैं अपनी स्कूटी यहां भूल गया था, पर आज है ही नहीं यहां।"

"हां, दो दिन पहले खेलते-खेलते मैंने भी अपने जूते यहां उतार दिए और फिर वहीं से घर चला गया, मैं भी मेरे जूते ढूंढ़ता हूं।"

डेनियल ने कहा, "कल मैं भी अपना स्केट बोर्ड यहां भूल गया। घर पहुंचा, तो मम्मी से डांट पड़ी और पापा ने गुस्सा होकर कहा, "जाओ अभी ढूंढ़कर लाओ।"

"फिर?" रोहन और बंटू बोले।

फिर क्या रात को अंधेरे में ढूंढ़ने आया। गिरगिट का डर लग रहा था और मच्छर भी काट रहे थे।

"फिर मिल गया तेरा स्केट बोर्ड?" बंटू और रोहन ने उत्सुकतावश पूछा।

"कहां मिला? तभी तो आज बिना स्केट बोर्ड आया हूं। पापा ने सख्त हिदायत दी है कि आज स्केट बोर्ड ढूंढ़कर लाना।"

तीनों अपना-अपना सामान पार्क में ढूंढ़ने लगे। पौधों के बीच में, बेंच के पीछे, स्विमिंग पूल के आस-पास कहीं नहीं मिल रहा था।

तभी स्कूटी ने देखा कि वे तीनों परेशान हैं, उसने रबर के जूतों के कान में धीरे से कहा "अब आया मजा।"

स्केट बोर्ड को हंसी आने लगी, तो स्कूटी ने उसका मुंह बंद कर दिया, "चुप, वे सुन लेंगे।"

रोहन, बंटू, डेनियल तीनों का आज खेलने का समय अपना सामन ढूंढ़ने में ही व्यर्थ गया और जब

## रचनाकार को जानिए

**रोचिका अरुण शर्मा : इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, सॉफ्टवेयर प्रोग्रामिंग डी. एन. आय. आय. टी. (मुम्बई), डायरेक्टर सुपर गेन ट्रेडर अकेडमी, कहानी संग्रह 'जो रंग दे वो रंगरेज'। हिंदी व अंग्रेजी में लेखन, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में लेखन।**

बगैर सामान के घर पहुंचे, तो उनकी मां भी नाराज हुई।

डेनियल की मां ने सख्ती से कहा "क्लब हाउस के 'लॉस्ट एंड फाउंड' रूम में जाकर देखना आज।"

शाम को फिर तीनों अपने सामान की खोजबीन में निकले। लॉस्ट एंड फाउंड में उन्हें देख रोहन, बंटू और डेनियल की जान में जान आई।

खोया-पाया इंचार्ज ने हिदायत देते हुए कहा, "ये सारे सामान सोसाइटी के हाउस कीपिंग स्टाफ ने यहां जमा किए हैं। अगली बार यदि तुम पार्क में सामान छोड़कर गए, तो तुम्हें अपना सामान यहां भी नहीं मिलने वाला।"

"हम खयाल रखेंगे, अपने सामान का।" तीनों एक साथ बोले।

"डेनियल, तुम्हें मैंने स्केट बोर्ड जॉगिंग ट्रैक के टाइल्स पर चलाते देखा है। जॉगिंग ट्रैक सैर के लिए है स्केटिंग के लिए नहीं। यदि तुम स्केटिंग रिंक के बाहर स्केट बोर्ड चलाते दिखे, तो ठीक नहीं।

"जी ठीक है, हम खयाल रखेंगे।" तीनों रोंआसे स्वर में बोले।

स्कूटी, स्केट बोर्ड एवं रबर के जूते एक-दूसरे को देखकर मुसकरा रहे थे।

## रचनाकार को जानिए

**डॉ अलका अग्रवाल :** सेवानिवृत्त प्राचार्या, बाल कविता, कहानी की कई पुस्तकें प्रकाशित। 1 बाल उपन्यास, शोध की 2 पुस्तकें, 2 कविता संग्रह और 1 कहानी संग्रह प्रकाशित। अनेक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त।

# कोरोना तुम कब जाओगे

**कोरोना** तुम कब जाओगे?
घर में बंद रहेंगे कब तक,
सबसे अलग, सहेंगे कब तक।
ऐसे भला, जिएंगे कब तक?
कोरोना तुम कब जाओगे?

ऑनलाइन पढ़ना, क्या पढ़ना,
दोस्त नहीं ना मिलना-जुलना।
ना टीचर , स्कूल न मस्ती,
कितना धीर धरें, अब तक गए।
कोरोना तुम कब जाओगे?

कब से ना बाजार गए हम,
कब से हम ना गए सिनेमा।
ना फुटबॉल, क्रिकेट ही खेला,
कब से ना देखा कोई मेला।
कोरोना तुम कब जाओगे?

अब तो जाओ तुम कोरोना,
दुनिया भर को आया रोना ।
बचपन सबका छीन लिया है,
हमको घर में बंद किया है।
कोरोना तुम कब जाओगे?

# धीमे-धीमे-धीमे

## अपने लेखक को जानिए

**डॉ. मोहम्मद अरशद खान :** कॉलेज में अध्यापन के साथ-साथ लेखन भी। बच्चों के लिए उपन्यास, कविता एवं कहानी विधा की बाल 14 पुस्तकें प्रकाशित। कई पुस्तकों का मराठी, अंग्रेजी, उड़िया और गुजराती भाषा में अनुवाद। भारतेंदु हरिश्चंद्र एवं हरिकृष्ण देवसरे सहित अनेक पुरस्कार प्राप्त।


**गोगू** कछुए ने अपने दोस्त बल्लू कछुए को एक चिट्ठी लिखी। बल्लू दूसरे जंगल के एक छोटे-से तालाब में रहता था।

गोगू ने कबूतर से कहा, "यह चिट्ठी मेरे दोस्त तक पहुंचा दो।"

कबूतर ने उबासी लेकर कहा, "माफ करना। मुझे नींद आ रही है। मैं तो अब पंखों में मुंह छिपाकर सोने जा रहा हूं।"

अब गोगू ने हिरन से कहा, "तुम तो बहुत तेज दौड़ते हो। तुम मेरी चिट्ठी बल्लू तक पहुंचा दो।"

हिरन ने कहा, "न भाई न, उस जंगल का शेर बहुत खूंखार है। मैं अपनी जान खतरे में नहीं डालना चाहता।"

गोगू ने अब बंदर से प्रार्थना की। लेकिन वह भी तैयार नहीं हुआ। उसने कहा, "उधर काले मुंह और लंबी पूंछ वाले लंगूर रहते हैं। वे हमें देखकर चिढ़ते हैं।"

गोगू ने खरगोश, लोमड़ी और नीलगाय से भी कहा। पर सबने उसे टाल दिया।

आखिरकार एक कौआ तैयार हुआ।

"ठीक है, मैं कोशिश करता हूं।" कौए ने कहा और चिट्ठी लेकर उड़ चला।

कौए ने जब चिट्ठी ले जाकर बल्लू कछुए को दी, तो वह बहुत खुश हुआ। उसने चिट्ठी पढ़ी। लिखा था, 'प्यारे दोस्त बल्लू। मैं यहां बड़े से तालाब में अकेले रहते-रहते बोर हो गया हूं। तालाब पानी से लबालब भरा हुआ है। खाने के लिए ढेर सारी मछलियां, घोंघे और टैडपोल हैं। नरम-मुलायम वनस्पतियां भी हैं। आ जाओ, तो मिलकर पार्टी करते हैं।'

बल्लू खुश होकर दोस्त गोगू से मिलने चल पड़ा। चलता रहा, चलता रहा। चलता रहा, चलता रहा। चलता रहा, चलता रहा। चलते-चलते महीनों बीत गए। जब वह गोगू के तालाब तक पहुंचा, तो हैरान रह गया।

पूछो क्यों?

...इसलिए कि वहां तक पहुंचते-पहुंचते गरमियां आ गईं थीं और तालाब सूख चुका था। ✪

# तरह-तरह के पेड़

पेड़ धरा पर प्यारे-प्यारे।
उनमें गुण हैं कितने सारे।।
प्राणी-जीवन, पेड़ सहारे।
पेड़ हमें भी लगते प्यारे।।

खट्टा-मीठा स्वाद दिलाते।
चटनी और अचार खिलाते।
आम सभी को ज्यादा भाता।
फलों में राजा वह कहलाता।।

पत्ते, फल कड़वे भी भाते।
उनमें औषधि-गुण हैं मिलते।।

शुद्ध हवा भी यह देते हैं ।
पेड़ प्रदूषण हर लेते हैं।

धरती के शृंगार यही हैं ।
जीवन की मनुहार यही हैं।।
हर मौसम में खिलते रहते।
फल भी हमें मुफ्त में देते।।

हर मानव को यही सिखाओ।
पेड़ लगाओ उन्हें बढ़ाओ।।
हरियाली धरती पर पाएँ।
तब ही बादल जल बरसाएँ।।

## रचनाकार को जानिए

**डॉ. प्रीति प्रवीण खरे** : दस पुस्तकें प्रकाशित। दूरदर्शन उद्घोषिका, लिटरेरी रिसोर्स पर्सन। शिक्षाप्रद शॉर्ट फिल्मों का निर्माण, प्रसारण। 14 नवंबर 2013 राष्ट्रपति भवन में आमंत्रण एवं चर्चा। मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी पुरस्कार-2017 प्राप्त।

# वृक्ष का न्योता

**शाख** फैलाए हर दिशा में
वृक्ष खड़ा मैं अरे विशाल।
लो न्योता देता मैं आओ
आओ कर लो पंछी विश्राम।

बैठ हवा में ताजी-ताजी
सब मीठे फल खाना जी तुम।
उड़ते रहते दूर गगन में
खूब थकान मिटाना जी तुम ।

खड़ा-खड़ा मैं ऊब गया हूँ
थोड़ी गपशप कर जाना तुम।
किस्सों से अपने मुझको भी
जग की सैर करा लाना तुम ।

पसंद आऊँ यदि मैं तुमको
अपना नीड़ बनाना जी तुम ।
बैठ शाख पर जब मन चाहे
मधुरिम गीत सुनाना जी तुम।

रचनाकार

**दिशा ग्रोवर :** कंप्यूटर इंजीनियर। बाल कविता, बाल नाटक और कहानियां लिखने में रुचि। 'प्रतिनिधि बाल कविता संचयन' (साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली) सहित अनेक पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित।

# अरे वाह पापा !

"ये स्कूल भी आजकल पढ़ाई के साथ न जाने क्यों इतनी एक्टीविटी कराते हैं कि बच्चे बस कुछ न कुछ करते ही रहें।" आरना की मां स्वाति, आरना के पापा गौरव को चाय देते हुए बोलीं।

गौरव लिखते हुए मुसकराए और अपने काम में लगे रहे। वह कुछ लिख रहे थे। गौरव सरकारी क्षेत्र में अच्छे अधिकारी के पद पर थे, लेकिन साहित्य में उनकी काफी रुचि थी। सो वह अच्छे लेखक भी थे। आज भी वह कोई कहानी पूरी करने में लगे थे।

तभी टीवी देख रही आरना को ध्यान आया कि उसे छब्बीस जनवरी के लिए कविता भी लिखनी है। वैसे तो आरना को कविता लिखना अच्छा लगता था। लेकिन, वह तो अभी बच्ची थी, सो छब्बीस जनवरी जैसे विषय पर कविता लिखना उसके लिए थोड़ा मुश्किल था। वैसे तो उसके पापा अक्सर उसकी मदद कर देते थे। लेकिन आज तो वह खुद अपनी किसी कहानी में उलझे थे। आरना परेशान होने लगी।

आरना टीवी बंद करके कागज पेन लेकर मां के पास रसोई में गई। मां से बोली, "मां, आप ही कविता लिखवा दो। मुझसे तो आज बन ही नहीं पा रही कविता।"

मां आटा गूंधते हुए बोली, "अरे पापा से मदद लो ना। वैसे भी, मैंने तो कभी कविता लिखी नहीं। हां, लिखकर सुना जरूर देना, मैं श्रोता अच्छी हूं।"

आरना ने कहा, "पर मां, पापा तो अपने काम में लगे हुए हैं।"

"तो क्या हुआ! बता तो देंगे ही, कैसे लिखो और तुमने तो पहले भी बहुत-सी कविताएं लिखी हैं।" मां ने उसका उत्साह बढ़ाते हुए कहा।

आरना कॉपी-पेन लेकर पापा की कुर्सी के पास जाकर खड़ी हो गई। पापा का ध्यान उस पर गया, पर वह लिखते-लिखते ही बोले, "बोलो आरना, क्या बात है?"

गौरव आरना को शायद ही कभी डांटते थे। इसलिए, आरना उनसे

चित्र : जय खोहवाल

अपनी हर बात बेझिझक कह लेती थी। लेकिन, वह इतनी संवेदनशील थी कि यह भी जानती थी कि पापा जब कोई काम कर रहे हों तो उन्हें डिस्टर्ब करना अच्छा नहीं। लेकिन, आज उसे जो कविता लिखनी थी, वह बन ही नहीं रही थी, और उसके पास समय भी ज्यादा नहीं था।

"पापा..., कल छब्बीस जनवरी पर कविता लिखनी है।" आरना बोली।

पापा अपने कागजों पर नजर गड़ाए हुए मुसकाए और बोले, "कल लिखनी है या आज ही लिखनी है!"

"नहीं-नहीं, आज ही लिखनी है। कल तो छब्बीस जनवरी है ही।" आरना ने अपनी गलती सुधारी।

"लिखने की कोशिश करो। दिक्कत होगी, तो मैं मदद कर दूंगा।" गौरव बोले।

आरना वहीं मेज पर कॉपी रखकर तुकबंदी ढूंढ़ने लगी, लेकिन मुश्किल यह थी कि बेचारी तीसरी क्लास की बच्ची, गणतंत्र के बारे में जानती ही कितना थी! फिर भी उसने अपनी अक्ल लगाकर कुछ लाइनों की तुकबंदी की,

आई जनवरी आई जनवरी
गणतंत्र दिवस लाई जनवरी
डॉ अंबेडकर ने संविधान बनवाया
गणतंत्र दिवस लाई जनवरी

इतना लिखकर उसने पापा को दिखाया तो पापा बोले, "और कोशिश करो, और कोई तुक मिला पाओ, तो देख लो। बाकी मैं देख लूंगा।"

यह कहकर वह फिर से अपनी कहानी में व्यस्त हो गए। आरना को एहसास हो गया कि अभी तो पापा कविता लिखवाने वाले नहीं, क्योंकि वह खुद अपने कागजों में डूबे हुए हैं। उसे खुद ही कविता लिखनी होगी।

वह अपनी कविता को लेकर उधेड़बुन में लगी रही, लेकिन कुछ बात बनी नहीं। खैर, थोड़ी देर में सभी ने खाना खाया। खाना खाने के बाद आरना जल्दी ही सो गई। हालांकि उसकी कविता अभी पूरी नहीं हुई थी और वह उसको लेकर चिंतित भी थी। लेकिन क्या करती, नींद के आगे किसकी चली है? वैसे भी उसे कुछ ज्यादा सूझ नहीं रहा था। जो भी उसे सूझा और जो वह जानती थी, उसे लिखकर वह सो गई। कागज पापा की स्टडी टेबल पर रखकर।

गौरव ने खाना खाकर टहलने के बाद अपनी मेज पर कागज देखा, तो उन्होंने आरना की रची कविता को पढ़ा और कुछ सोचा। क्योंकि वह भी थके हुए थे, सो ज्यादा मूड में नहीं थे। इसलिए वह भी कागज वापस वहीं रखकर सो गए। आरना की कविता अब तक अधूरी थी।

सुबह हुई। आज छब्बीस जनवरी

थी। आरना को स्कूल जल्दी जाना था, और उसके पापा को भी, इसलिए सब जल्दी ही उठ गए थे। गौरव तो और भी जल्दी उठकर अपनी मेज पर बैठे, फिर से कुछ लिखने में व्यस्त हो गए थे।

आरना तो तब जागी थी, जब पापा नहाने जा रहे थे। वह भी फटाफट स्कूल के लिए तैयार होने लगी। अभी स्कूल जाने में दो घंटे बाकी थे। लेकिन कविता..., अरे हां, वह तो अटकी हुई थी। अब क्या होगा! मैडम क्या कहेंगी! इतनी होनहार, जिम्मेदार बच्ची कैसी टूटी-फूटी और अधूरी कविता ले आई है। यह सोचकर आरना परेशान हो उठी। गौरव कपड़े पहनकर आरना के पास आए और बोले, "हेलो आरना, क्या हाल हैं?"

आरना के चेहरे पर आज कोई रौनक नहीं थी। वह कुछ नहीं बोली।

"अरे हां, वह तुम्हारा कविता वाला कागज देखा मैंने। ठीक-ठाक लिखा है। तुम वही सुना देना।" गौरव के चेहरे पर हलकी-सी मुसकान थी।

आरना की नजर पापा की मेज पर रखे कागज पर गई। उसने उदासी के साथ कागज उठाया और कविता पढ़ने लगी। उसके चेहरे की उदासी धीरे-धीरे खुशी की रौनक में बदलने लगी लगी। वह दौड़कर पापा के पास आई और उनसे लिपटकर चहकते हुए बोली, "अरे पापा वाह! आपने तो कविता सुधारकर बहुत अच्छी कर दी। अब तो मेरी कविता को सुनकर सब वाह-वाह करेंगे।"

गौरव ने आरना को गोदी में उठाकर उसका माथा चूम लिया। ✪

## अपने लेखक को जानिए

**निश्चल : शिक्षक हैं, पर मन से साहित्यकार। बच्चों की बात बच्चों ही नहीं, पूरे समाज तक पहुंचे, चाहे किसी भी माध्यम से, इसके लिए कोशिश करते हैं। बाल पत्रिका 'अभिनव बालमन' 2009 से शुरू की और उसके संपादक के रूप में भी कार्य रहे हैं। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा लल्ली प्रसाद पाण्डेय बाल पत्रकारिता सम्मान मिला।**

# पोलर बीयर

**जहां चारों तरफ बर्फ और सिर्फ बर्फ हो, वहां राज चलता है ऐसे भालुओं का जो देखने में तो मासूम होते हैं, पर होते हैं गजब के शिकारी। आम मनुष्य से चौगुने भारी इन भालुओं की दुनिया में जाना खतरे से खाली नहीं। ये भालू हैं पोलर बीयर यानी ध्रुवीय भालू।**

आर्कटिक और उसके आसपास के क्षेत्रों का प्राणी है पोलर बीयर। दरअसल आर्कटिक शब्द ग्रीक भाषा का है और इसका मतलब ही भालू होता है। इसके विपरीत अंटार्कटिक का ग्रीक अर्थ है, वह क्षेत्र जहां भालू नहीं होते। अंटार्कटिक पेंग्विन का निवास स्थान है।

पोलर बीयर की खोज का श्रेय जॉन फिप्स को जाता है। उन्होंने 1774 में इनकी खोज की। यह दुनिया का सबसे बड़ा मांसाहारी प्राणी है। भालुओं की प्रजाति में यह सबसे बड़ी प्रजाति है। पोलर बीयर की कुल 19 प्रजातियां हैं। इनमें से 13 नॉर्थ अमेरिकन क्षेत्रों से ग्रीनलैंड तक फैली हैं। ब्राउन बीयर इनके सबसे नजदीकी रिश्तेदार हैं।

भालुओं का परिवार उर्सीनाए कहलाता है। इनकी उत्पत्ति करीब 42 लाख साल पहले हुई थी। पोलर बीयर के करीब एक लाख तीस हजार साल पुराने जीवाश्म भी मिले हैं। ये जीवाश्म आठ साल पहले प्रिंस चार्ल्स फोरलैंड में मिले थे।

पोलर बीयर आर्कटिक क्षेत्र में ही मिलते हैं। खास बात यह है कि केवल पांच देशों अमेरिका (अलास्का), कनाडा, रशिया, ग्रीनलैंड और नॉर्वे में ही इनकी उपस्थिति है। जहां ये पाए जाते हैं, वहां मनुष्य की आबादी न के बराबर है। ये पूरे आर्कटिक में फैले हैं । दूर-दूर तक आने-जाने के लिए उनकी नाव भी बड़ी अनोखी होती है। ये किसी बर्फ के टुकड़े पर खड़े हो जाते हैं। वह टुकड़ा पानी में बहते हुए इन्हें दूर-दूर तक ले जाता है।

पोलर बीयर को प्रकृति ने कुछ ऐसा बनाया है कि आर्कटिक में शून्य से पैंतालीस डिग्री नीचे के तापमान में भी ये बड़ी आसानी से रह लेते हैं। इनके शरीर पर फर की दो तहें होती हैं, जो इन्हें सर्दी में भी गरमी का अहसास कराती हैं। साथ ही इनके शरीर पर चर्बी की बड़ी मोटी परत होती है, जो इन्हें लगातार गरमी प्रदान करती रहती है। इनकी छोटी पूंछ इनके शरीर की गरमी को बाहर जाने से रोकती है। हालत यह है कि पोलर बीयर को ठंड से नहीं, बल्कि गरमी से परेशानी होती है।

पोलर बीयर का केवल एक ही दुश्मन है। और वह है, दुनिया का सबसे विकसित प्राणी मनुष्य। इनके मांस और खासकर फर के लिए बड़ी निर्ममता से इनका शिकार होता है। इसीलिए आजकल इन्हें लुप्त होते प्राणियों की सूची में डाला गया है। करीब पांच साल पहले हुई गणना में पाया गया था कि केवल 20,000 से 25,000 ही पोलर बीयर अब धरती पर हैं।

पोलर बीयर के पैरों में भी फर होते हैं। पंजे बड़े छोटे होते हैं और उनकी बनावट ऐसी होती है कि बर्फ पर ये कभी नहीं फिसलते। इनकी सूंघने की शक्ति बड़ी जबरदस्त होती है। साथ ही जबड़े इतने मजबूत होते हैं कि ये सौ किलो वजनी सील को एक झटके में पानी से बाहर खींच लेते हैं।

पोलर बीयर को कई बार समुद्री प्राणी भी मान लिया जाता है। कारण है कि इनके जीवन का अधिकांश हिस्सा समुद्र के किनारे ही व्यतीत होता है। ये बर्फ के साथ चलते-चलते समुद्री पानी के पास पहुंचते हैं, क्योंकि इनका मुख्य भोजन सील है, जो पानी में मिलती है। ये बड़े जबरदस्त शिकारी होते हैं और बर्फ के नीचे से सील को पकड़कर निकालने में माहिर होते हैं। पोलर बीयर अपने शिकार का घंटों इंतजार कर सकते हैं। कई बार जब बर्फ के नीचे इन्हें सील दिख जाती है, तो ये उसके निकलने के इंतजार में कई मील तक उसके पीछे-पीछे चले जाते हैं और जैसे ही पानी देखकर सील बाहर आती है, ये उसे दबोच लेते हैं।

पोलर बीयर बहुत विशालकाय होते हैं। नर पोलर बीयर का वजन 350 से 600 किलो तक होता है। इनकी लंबाई तीन मीटर होती है। मादा का वजन करीब 200 से 250 किलो तक होता है। आज तक का सबसे भारी-भरकम बीयर 1960 में अलास्का में मिला था, जिसका वजन 1002 किलोग्राम था।

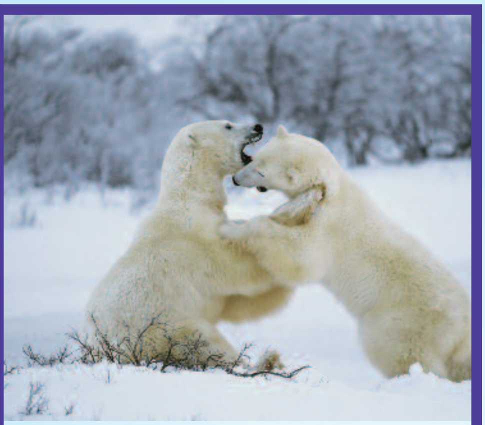

आमतौर पर मादा भालू नवंबर और दिसंबर माह में बच्चों को जन्म देती है। बच्चों के जन्म से करीब दो महीने पहले खूब खा-पीकर मादा भालू एक खोह या गुफा में जाकर छिप जाती है। करीब दो महीने बाद वह बच्चों को जन्म देती है। जन्म के समय इनका वजन केवल आधा किलो और लंबाई एक फुट तक होती है।

जन्म के बाद बच्चे मां के दूध पर ही निर्भर रहते हैं। जब बच्चे बाहरी दुनिया में आने लायक हो जाते हैं, तो मादा उन्हें लेकर गुफा से बाहर आ जाती है। दो वर्ष की उम्र तक बच्चे मां के संग रहते हैं और फिर अपनी अलग दुनिया बसा लेते हैं।

पोलर बीयर की उम्र ज्यादा नहीं होती है। इनकी औसत आयु केवल 18 वर्ष है, परंतु कनाडा के एक चिड़ियाघर में एक पोलर बीयर 42 साल तक जिंदा रहा था।

# बबलू की बिल्ली

**बबलू** की बिल्ली का नाम मिनि था। स्कूल से घर आने के बाद वह अपनी बिल्ली के साथ खेला करता था। मम्मी और पापा ने उसे अनेक बार समझाया था कि स्कूल से घर आने के बाद वह खाना खा लेने के बाद थोड़ी देर आराम करे, फिर पढ़ाई-लिखाई में लग जाए।

लेकिन मिनि के प्रति उसका लगाव कुछ इस प्रकार से बढ़ गया था कि वह उसके बिना एक पल भी नहीं रह सकता था। छुट्टी वाले दिन तो मिनि के पीछे उसे खाने-पीने की सुध भी नहीं रहती थी।

बबलू के पापा बहुत बड़े डॉक्टर थे। वह बबलू को भी एक बहुत बड़ा डॉक्टर बनाना चाहते थे। बबलू का बिल्ली के प्रति इतना अधिक लगाव देखकर उन्हें गुस्सा आ जाता था। उन्होंने भी बबलू को एक-दो बार डांटा था। लेकिन बात यह थी कि उनके डांटते ही बबलू रोने लगता था और खाना-पीना छोड़ देता था। इस वजह से वह उसे अधिक डांट भी नहीं पाते थे। बबलू घर में अकेला बच्चा था। इसलिए मम्मी-पापा का उस पर बहुत अधिक स्नेह था। लेकिन दोनों को चिंता भी होती थी कि बबलू पढ़ाई पर उतना ध्यान नहीं देता, जितना देना चाहिए।

एक दिन बबलू स्कूल से घर आया तो उसे पता चला कि उसकी बिल्ली ने चार बच्चों को जन्म दिया है। वह तुरंत बिल्ली और उसके बच्चों को देखने गया। मिनि अपने चारों बच्चों

चित्र : सुशील दोषी

को दूध पिला रही थी। बबलू को देखकर वह खुश हो गई। मिनि के बच्चों को देखकर बबलू भी बहुत खुश हुआ और एक-एक को गोद में उठा लिया।

अब तो बबलू को किसी की जरुरत ही नहीं थी। वह दिन-रात उन्हीं में मगन रहने लगा। इसका उसकी पढ़ाई पर बुरा असर हुआ और उस बार के यूनिट टेस्ट में उसे बहुत कम अंक मिले। इस वजह से उसके माता-पिता नाराज हुए और उनकी चिंता भी बढ़ गई।

बबलू के पिता ने तय किया कि वह किसी भी हालत में बबलू की पढ़ाई बर्बाद नहीं होने देंगे।

कुछ दिन बीत गए। दोपहर का समय था। बबलू अभी-अभी स्कूल से आया था। आते ही मां ने कहा, “तुम मुंह-हाथ धो लो और जल्दी से खाना खा लो।”

लेकिन बबलू रोज की तरह आज भी सबसे पहले अपनी बिल्ली के पास गया। मिनि बेचैन होकर इधर-उधर घूम रही थी और थोड़ी गुस्से में भी लग रही थी। वह बार-बार म्याऊं-म्याऊं कर रही थी। उसके बच्चे गायब थे।

बिल्ली के बच्चों को न देखकर बबलू भी परेशान हो गया। इधर-उधर देख लेने के बाद भी जब बिल्ली के बच्चे न दिखे तो वह उलटे पांव वापस अपनी मां के पास आया और उनसे पूछने लगा, “मम्मी..., मिनि के सब बच्चे कहां हैं? एक भी बच्चा दिखाई नहीं दे रहा है।”

मम्मी बोलीं, “पापा ने बिल्ली के बच्चों को बेच दिया है। अब वे बच्चे यहां नहीं आएंगे। वे लोग बिल्ली के बच्चों को लेकर कहीं दूसरी जगह चले गए हैं।”

यह सुनकर बबलू जोर-जोर से रोने लगा। मां जानती थीं कि बबलू रोएगा, इसलिए वह उसे प्यार से समझाने लगीं। लेकिन बबलू के आंसू थमने का नाम न ले रहे थे। मां का समझाना बेकार गया। शाम तक बबलू ने कुछ खाया-पीया नहीं।

रात में उसके पापा जब घर आए, तो बबलू को पहले प्यार से समझाया लेकिन जब वह नहीं माना, तो उसे डांटने लगे। बबलू बार-बार बिल्ली के बच्चों को वापस लाने के लिए कह रहा था।

यह सुनकर उसके पापा का क्रोध बढ़ गया और उन्होंने बबलू को जोर से डांट दिया। फिर बोले, “अगर तुम चुप नहीं हुए तो मैं मिनि को भी

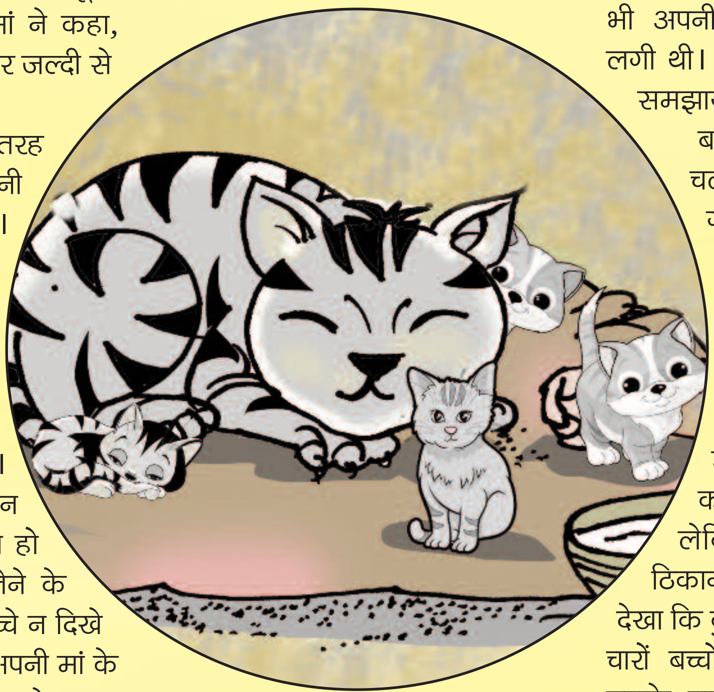

किसी और को दे दूंगा।”

डांट खाकर बबलू को इतना दुख नहीं हुआ जितना कि पापा के मुंह से यह सुनकर कि वह मिनि को भी किसी और को दे देंगे। वह और जोर-से रोने लगा और दौड़ता हुआ मिनि के पास चला गया। मिनि ने भी बच्चों के खो जाने के दुख में सुबह से दूध तक नहीं पीया था।

बबलू मिनि को गोद में लेकर रोने लगा। यह देखकर बबलू की मां की आंखों में भी आंसू आ गए। पिता को भी अपनी गलती समझ में आने लगी थी। दोनों ने बबलू को फिर से समझाया लेकिन बबलू रोता रहा।

बबलू के माता-पिता सोने चले गए। बबलू मिनि को गोद में लिए हुए रोते-रोते वहीं सो गया।

सुबह होने पर जब बबलू की नींद खुली, तो उसकी गोद में मिनि नहीं थी। वह बहुत घबरा गया। उसे लगा कि पापा ने मिनि को भी किसी को दे दिया। लेकिन उसकी खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा, जब उसने देखा कि कुछ ही दूरी पर मिनि अपने चारों बच्चों को दूध पिला रही है। उसके बाद बबलू की नजर अपने माता-पिता पर पड़ी। वे सामने खड़े मुसकरा रहे थे। बबलू उनके पास गया और पापा ने उसे गले से लगा लिया।

बबलू ने माता-पिता को वचन दिया कि वह अब से पढ़ाई पर भी खूब ध्यान देगा। तब से बबलू अपने वचन का पालन भी करने लगा।

## अपने लेखक को जानिए


**डॉ. विजय कुमार** : बी.ए. आनर्स दिल्ली विश्वविद्यालय, एम.ए : सावित्री बाई फुले, पुणे विश्वविद्यालय पीएच.डी : वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, हिंदी कहानीकार एवं अनुवादक।

# लक्षद्वीप की सैर

हर वर्ष प्रिशा और आर्यन मम्मी-पापा के साथ गरमी की छुट्टियों में घूमने जाते थे। इस बार वे लोग लक्षद्वीप घूमने जा रहे थे। लक्षद्वीप अरब महासागर में है। वहां जाने के लिए पहले उन्हें कोचीन जाना था।

वे दिल्ली से केरल एक्सप्रेस द्वारा कोचीन के लिए रवाना हो गए। गाड़ी जब केरल राज्य में पहुॅंची, तो दूर तक हरियाली दिखाई देने लगी। सब तरफ नारियल और केले के पेड़ दिखाई दे रहे थे। वहां स्टेशन के पास बने होटल में वे ठहरे। एक दिन कोचीन घूमने के बाद अगले दिन, वे चारों सामान लेकर विलिंग्डन आईलैंड पहुंचे जहां इंदिरा गांधी मार्ग पर लक्षद्वीप प्रशासन कार्यालय में उन्हें अपनी उपस्थिति दर्ज करानी थी। शाम चार बजे शिप की रवानगी थी, अतः शीघ्र वे लोग बंदरगाह पहुंचे। समुद्र के किनारे दूर से उन्हें अपना शिप 'एम वी टीपू सुल्तान' खड़ा दिखाई दिया। पास पहुंचने पर सभी की चेकिंग हुई और पहचान पत्र दिए गए जिन्हें अपनी पोशाक पर लगाए रखना जरुरी था। सीढ़ी द्वारा वे शिप में पहुंचे, जो बहुत बड़ा था। ठीक चार बजे शिप का भोंपू बजा। लंगर खोल दिए गए। पानी के जहाज द्वारा यात्रा करने का यह उनके लिए पहला अवसर था, इसलिए आगे बढ़ते शिप को देख सभी रोमांचित थे।

रात में खाना खाकर वे डेक पर आ गए। चारों ओर अरब महासागर की अथाह जलराशि थी, जिसको काटते हुए जहाज तेजी से आगे बढ़ रहा था। वहां खड़े जहाज के एक ऑफिसर ने बताया, "लक्षद्वीप भारत का सबसे छोटा केंद्र शासित प्रदेश है. यहां कुल 36 द्वीप हैं, जो 32 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैले हुए हैं। मात्र 10 द्वीपों पर आबादी है, जिनमें से छः द्वीप पर्यटकों के लिए खुले हुए हैं। भारत सरकार द्वारा इन द्वीपों पर ठहरने की इजाजत नहीं मिलती।"

डेक पर चल रही तेज हवा और लहरों के शोर के कारण प्रिशा और आर्यन को डर लग रहा था, इसलिए वे अपने केबिन में आकर सो गए।

सुबह आंख खुलते ही उन्होंने जहाज को खड़ा देखा। वे चारों डेक पर आए। मम्मी बोलीं, "देखो बच्चों, उगते सूर्य की लालिमा समुद्र पर पड़कर कितनी सुंदर लग रही है।"

तभी आर्यन चिल्लाया, "देखो, डालफिन छलांगे लगा रही है।"

नाश्ते के बाद सभी पर्यटक फेरी में बैठ गए। रास्ते में आर्यन ने पूछा, "पापा, जहाज का लंगर द्वीप के किनारे पर क्यों नहीं डाला गया?"

पापा ने बताया, "बंदरगाह न होने के कारण जहाज को द्वीप से कुछ किलोमीटर की दूरी पर खड़ा करते हैं।" जैसे ही फेरी मिनीकॉए द्वीप के किनारे पर पहुंची, प्रिशा खुशी से

चिल्लाई, "पापा, समुद्र के किनारे पर बर्फ बिछी हुई है।"

वहां के गाइड ने कहा, "यह बर्फ नहीं रेत है, जो दूर से बिल्कुल बर्फ जैसी दिखाई देती है। इस सफेद महीन रेत और दूर-दूर तक फैले नारियल के घने वृक्षों के कारण ही लक्षद्वीप इतना सुंदर है।"

पापा ने अपने हाथ का सहारा देकर सबको फेरी से उतरने में मदद की। गाइड बोला, "आप सब कुछ देर इन तटों का आनंद लीजिए। थोड़ी देर बाद लाईट हाउस देखने जाना है।"

प्रिशा और आर्यन समुद्र तट पर रेत में खेलने लगे। मम्मी-पापा वहां की खूबसूरती निहारने लगे। आर्यन बोला, "पापा, समुद्र के किनारे का पानी बिल्कुल हरा क्यों है?"

"ये लैगूनस हैं। लैगून समुद्री पानी से बनी छिछली झील होती है, जो कोरल द्वीप से घिरी होती है।" पापा ने बताया।

जीप से सबको अंग्रेजों द्वारा निर्मित लाईट हाउस ले जाया गया। वहां से पूरा मिनीकॉए द्वीप दिखाई दे रहा था। फिर वे टूना मछली की केनिंग फैक्टरी देखने गए। अब तक शाम हो चली थी इसलिए सभी यात्री फेरी द्वारा जहाज में लौट आए।

रात में सबने हॉल में टेलीविजन पर फिल्म देखी। अगली सुबह जहाज कावरती आईलैंड पहुंचा। कावरती लक्षद्वीप की राजधानी है,. इस कारण यह मिनीकॉए से अधिक विकसित है। वहां की प्रसिद्ध उज्र मस्जिद देखने के बाद वे फिश एक्वेरियम गए। वहां रंग-बिरंगी मछलियों और व्हेल के कंकाल को देखकर बच्चे बहुत खुश हुए।

ग्लास बाटम बोट में बैठकर वे समुद्री जनजीवन देखने गए। बोट की तली में लगे ग्लास से उन्होंने पानी के अंदर अद्भुत मछलियां और पेड़-पौधे देखे। मम्मी बोलीं, "हम सोच भी नहीं सकते थे, इस अथाह जलराशि के अंदर इतना प्राकृतिक सौंदर्य बिखरा पड़ा होगा।"

आर्यन गाइड से बोला, "अंकल देखिए, बड़े बड़े पत्थरों पर उगे ये पौधे कितने सुंदर लग रहे हैं।"

गाइड बोला, "ये पौधे नहीं, छोटे

## रचनाकार को जानिए

**रेनू मंडल :** हाउसवाइफ। पिछले 40 वर्षों से लेखन कार्य में निरंतर सक्रिय। अब तक लगभग 800 कहानियां प्रकाशित। बड़ों के साथ साथ बच्चों की कहानियां भी देश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। एक कहानी संग्रह भी आ चुका है।

मिनीकॉए द्वीप

मछली का शिकार

लाईट हाउस , मिनीकॉए

छोटे जीव हैं, जो लाईम स्टोन से बनी चट्टानों के बीच समुद्र में रहते हैं। बाहर से देखने पर ये पौधों की तरह दिखाई देते हैं। इन्हें कोरल कहते हैं। लक्षद्वीप को कोरल का स्वर्ग भी कहा जाता है।"

आर्यन ने एक और प्रश्न किया, "यहां के लोगों की आजीविका का क्या साधन है?"

गाइड ने प्रशंसात्मक नजरों से उसे देखा, "नारियल की खेती और मछली का व्यवसाय यहां के प्रमुख उद्योग हैं।"

शाम को वे सब जहाज पर लौट आए। तीसरे दिन जहाज कालपेनी द्वीप पहुंचा। वहां के मूल निवासियों ने पर्यटकों को लक्षद्वीप का लोकनृत्य 'लावा' दिखाया। दोपहर में सबको एक-एक पाइप, चश्मा और लाइफ जैकेट दी गई। प्रिशा ने पूछा, "इन चीजों का हम क्या करेंगे?"

पापा बोले, "आंख पर चश्मा व पाइप को नाक व मुंह में लगाकर हम स्नोरकलिंग करेंगे।"

पहले प्रीशा और आर्यन को कुछ डर लगा फिर उन्होंने स्नोरकलिंग का खूब आनंद उठाया। फिर उन्होंने रेत पर लेटकर आराम किया। तभी वहां दो बच्चे आए। उनके हाथों में शंख थे। उन्होंने बच्चों से अपनी भाषा में कुछ कहा, जिसे बच्चे समझ न सके। पापा बोले, "ये हमसे मलयालम भाषा में शंख खरीदने को कह रहे हैं।"

पापा ने कुछ शंख खरीद लिए. मम्मी ने गाइड से पूछा, "क्या लक्षद्वीप की भाषा मलयालम है?"

गाइड बोला, "हां, सभी द्वीपों पर मलयालम बोली जाती है। सिर्फ मिनीकॉए एकमात्र द्वीप है, जहां महाल भाषा बोली जाती है।"

शाम को फेरी से बारी-बारी सब जहाज पर चढ़ने लगे। आर्यन की बारी आने पर उसने जहाज के कर्मचारी की ओर हाथ बढ़ाया, तो पानी की एक तेज लहर आई। फेरी एक ओर उछली। आर्यन अपना संतुलन न बना सका और समुद्र में गिर पड़ा। सभी लोगों की चीख निकल गई। इससे पहले कि जहाज पर खड़े कर्मचारी कुछ करते, फेरी वाला जल्दी से फेरी को आर्यन के करीब ले आया। आर्यन ने फेरी का कोना पकड़ लिया। पापा ने हाथ बढ़ाकर आर्यन को फेरी में खींच लिया। एक बहुत बड़ी दुर्घटना होते-होते बची थी।

जहाज पर वह उनकी अंतिम रात थी, इसलिए सभी यात्रियों ने डेक पर नृत्य करके मनोरंजन किया। जहाज धीरे-धीरे कोचीन की ओर बढ़ रहा था। ✪

उज्र मस्जिद, कावरती

ग्लास बाटम बोट

समुद्र में कोरल की सैर

लक्षद्वीप का लोकनृत्य 'लावा'

वॉटर स्पोर्ट्स

कावरती आईलैंड

# धूप और छाया

**धूप** सुबह अलसाई सी उठी। अंगड़ाई ली। मुंह धोकर और उजली हुई। अपनी गठरी खोली। गठरी खुलते ही जा बैठी पेड़ पर, मेढ़ पर, पहाड़ पर, झाड़ पर, गागर पर, सागर पर, वन में, उपवन में। और फिर छाया का हाथ पकड़ कूद पड़ी। पेड़ के, झाड़ के, पहाड़ के संग घूमती फिरी इधर-उधर।

ऊपर आकाश में चील मंडराई, तो नीचे छाया उसके साथ भागी। चील के पंखों के ऊपर धूप सवार थी और नीचे पंजों में छाया लटकी हुई थी। जब बच्चे मैदान में दौड़ते हुए, खिलखिलाते गोल-गोल घूम रहे थे तो ये दोनों भी गोल-गोल उनके साथ-साथ दौड़ रही थीं।

तभी छाया की निगाह चूहे के बिल पर पड़ी। वह दौड़ी और झट से उसमें घुस गई। और लगी धूप को आवाज देने। अब भला धूप कैसे घुसती? बिल के बाहर खड़ी इंतजार करती रही। खड़े-खड़े धूप को भी गुस्सा आ गया। वह भी दौड़कर समुद्र की छाती पर जा लेटी।

जब शाम को छाया बिल से निकली, तो वह लंबी-लंबी और लंबी हो रही थी और धूप छोटी और छोटी। धूप ने अपनी गठरी बांधी और छाया को बैठाकर चल दी। छाया की उदासी गहरी होकर रात हो चली थी। बस अब वह तुरंत सो जाना चाहती थी। कल उसे अपनी सहेली धूप से मिलने की जल्दी थी।


### अपने लेखक को जानिए

**शिवचरण सरोहा** : दिल्ली प्रशासन में अध्यापक। विविध पत्र-पत्रिकाओं में बाल साहित्य, लघुकथाएं एवं कहानियां प्रकाशित। हिंदी अकादमी, दिल्ली एवं बाल साहित्य संस्थान, उत्तराखंड से पुरस्कृत।

# मोहन का घमंड

**जनभावना** मध्य विद्यालय लालगढ़ का एक आदर्श स्कूल था। यहां नामांकन का मतलब था, दसवीं में अच्छे अंकों से पास होने की गारंटी। इस कारण सभी लोग इस स्कूल में अपने बच्चों को पढ़ाना चाहते थे।

इसी स्कूल में मोहन नाम का एक लड़का भी पढ़ता था। वह था तो पढ़ने में अव्वल, परंतु घमंडी था, एक नंबर का। इसलिए लोगों उसकी पढ़ाई वाले गुणों को देखने की कोशिश भी नहीं करते थे।

आज स्कूल में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में सभी विद्यार्थियों को आकर अपनी-अपनी कला दिखलाने की बारी थी। इस कारण रिहर्सल का काम करने के लिए प्रथम पाली में सबको बुलाया गया था। सभी बच्चे आकर अपने-अपने रोल का रिहर्सल कर शाम को होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए तैयार हो गए।

तभी प्राचार्य को पता चला कि मोहन रिहर्सल के लिए नहीं आया है। स्कूल के चपरासी से मोहन को खबर भेजी गई कि आकर वह भी अपना रिहर्सल कर ले, ताकि शाम के प्रोग्राम में कोई दिक्कत न हो।

प्राचार्य की बात को भी मोहन नहीं माना और कहलवा भेजा, "मैं शाम के प्रोग्राम में सफलता पूर्वक अपनी कला का प्रदर्शन कर लूंगा।"

प्राचार्य तो मोहन के गुणों से अवगत थे ही। इस कारण बात आई -गई होकर रह गई।

शाम के समय सभी प्रतिभागियों के द्वारा अपनी कला दिखलाने की बारी आई और सब अपने रोल को पूरी जिम्मेदारी से निभाने में सफल रहे। मुख्य अतिथि स्कूल इंस्पेक्टर प्रतिभागियों के प्रदर्शन से खुश दिखाई दे रहे थे। बच्चों में भी अद्भुत खुशी दिख रही थी।

अंतिम भूमिका मोहन की थी जिसमें उसे मृदंग बजाना था । वह इसमें पारंगत भी था, परंतु अपने अति आत्मविश्वास के कारण वह एक सप्ताह से इसका रियाज नहीं कर रहा था। इस कारण स्कूल के सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतिम पड़ाव पर रिद्म भूल गया। स्कूल के संगीत शिक्षक डॉ. नवीन उपाध्याय ने भी बहुत कोशिश की परंतु वह सफल

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

नहीं हो सका। आज प्राचार्य की स्कूल में किरकिरी हो गई थी। संगीत शिक्षक नवीन उपाध्याय सर भी काफी दुखी हो रहे थे। मोहन ने अपने घमंड और लापरवाही से स्कूल का नाम खराब कर दिया था।

पुरस्कार वितरण के बाद अपने भाषण में मुख्य अतिथि ने कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रम काफी अच्छा रहा। सर्वोत्तम प्रदर्शन करने वाले शुभम को सर्वश्रेष्ठ कलाकार का पुरस्कार दिया गया।

अंत में अपने समापन भाषण में मुख्य अतिथि ने कहा, "बच्चों को सफलता के लिए लगातार प्रयासरत रहने की जरूरत है। इसी लगातार किए गए श्रम से ही सफलता मिलती है।"

सभी के सामने शुभम की उन्होंने खूब प्रशंसा की। अंत में मोहन की बात आई तो उन्होंने मोहन का उदाहरण देते हुए कहा, "बच्चों को अतिआत्मविश्वास से बचने की जरूरत है। यह बहुत खराब चीज होती है। यह घमंड को ही जन्म देता है। इसलिए रियाज लगातार करने की जरूरत है।"

मुख्य अतिथि जाते-जाते मोहन को सीखने की बात भी कह गए। आज मोहन का हालत देखकर प्राचार्य भी दुखी थे।

मोहन ने मन ही मन ठान लिया कि अपना आलस छोड़कर वह फिर से अपना मुकाम हासिल कर के दिखाएगा। ✪

## अपने लेखक को जानिए

**डॉ. अशोक : पूरा नाम डॉ. अशोक कुमार शर्मा। एक सेवा निवृत्त पदाधिकारी। साहित्य बहुत पसंद है। लेख, कविता और लघुकथाएं लिखते हैं। बच्चों के लिए लिखना बेहद पसंद है।**

# पुस्तक परिचय

**पुस्तक : ऐसा था नानी का बचपन**
**रचनाकार : डॉ. अलका अग्रवाल**
**प्रकाशक : सहित्यागार, जयपुर**
**फोन : 0141-2310785**
**ईमेल : sahityagar@gmail.com**
**मूल्य : 200 रुपए**

यह बाल उपन्यास 10 अध्यायों और 110 पृष्ठों में फैला हुआ है। आत्मकथा शैली में लिखा गया यह उपन्यास, टाइम मशीन में बैठकर नानी के बचपन की यात्रा करने जैसा है,जिसमें बच्चों को बड़ा मजा आएगा।

नानी अपने छोटे- छोटे नाती-पोतों को (1964 से 1972 तक ) कहानी सुना रही हैं। ऐसा समय जब न टीवी था, न मोबाइल, न वीडियो गेम न इंटरनेट। यहां तक कि घर में फ्रिज, कूलर, ए सी जैसी सुविधाएं भी नहीं थीं। परंतु रिश्ते-नातों, आत्मीयता और प्यार से बहुत समृद्ध था, वह बचपन।

कठपुतली का तमाशा, जादूगर का मायाजाल, सर्कस जैसे रोचक प्रसंगों से बच्चों का साक्षात्कार होगा। लाख की चूड़ियां बनते हुए देखना, कलई

वाला, घर में मटके की कुल्फी वाले से घर के सब लोगों का कुल्फी खाना, लॉन और छतों पर सोना, बड़े ही रोचक हैं। उस समय के आउटडोर गेम्स, खो-खो, आइस-पाइस, छुपम-छुपाई ही नहीं, बरसात के पानी में नाव तैराना, मिट्टी के घरौंदे बनाना भी आज के बच्चों के लिए बहुत अनूठा अनुभव होगा।

बच्चे सरल और रोचक शैली में लिखे उपन्यास से उस समय के बच्चों के आनंद से स्वंय को जोड़ पाएंगे।

यह उपन्यास उस समय के बचपन के अनगिनत किस्से समेटे हुए है, जिनके माध्यम से उस समय के परिवार, पड़ोस, रिश्तेनातों, समाज, संस्कृति को बच्चा सहज ही समझ जाएगा और उसे लगेगा जैसे वह उस समय में ही जी रहा है।

किताब के चित्र उस समय को साकार कर देते हैं। भाषा सरल और शैली बाल मन के अनुकूल और चित्रात्मक है। कागज और छपाई उत्कृष्ट है। पुस्तक का आकार और मुखपृष्ठ इसे आकर्षक बनाते हैं। बच्चों को नानी की कहानियां पढ़ने में वाकई आनंद आएगा।

**समीक्षक : जया गुप्ता**

# मछली और मांझी

माँझी ने एक मछली पकड़ी
नदी किनारे जाकर,
थी वह सुन्दर, अति सुकोमल
बोली गिड़गिड़ाकर।

मैं नन्ही-सी जान हूँ भैया
मुझे नहीं तुम मारो,
मेरे प्यारे भैया माँझी
झट पानी में डालो।

सुनी बात जब मछली की
माँझी को दया फिर आयी,
उठा मछली को जल में फेंका
फिर यह कसम खायी।

अब नहीं मैं मछली मारुँ
करुँ न यह व्यापार,
जीवों का कल्याण करुँगा
करुँ सभी को प्यार।

## अपने लेखक को जानिए

**प्रभात कुमार धवन** : देश के लगभग दो सौ पत्र-पत्रिकाओं में ढाई हजार के लगभग रचनाएं प्रकाशित। इसके अलावा नेपाल, अमेरिका में भी दो दर्जन रचनाएं छपीं। आकाशवाणी पटना से कहानी एवं आलेख प्रसारित। 'आज' दैनिक पटना में उपसंपादक के पद पर कार्यरत।

# दुनिया में साइकल

निजी उपयोग के लिए दुनिया में सबसे ज्यादा साइकल का प्रयोग होता है। यह दुनिया का सबसे सस्ता और स्वास्थ्य के लिए सबसे बढ़िया वाहन भी है।

तो आइए, साइकल के बारे में कुछ आश्चर्यजनक बातें जानते हैं।

❐ रोजाना तीन घंटे या सप्ताह में तीस किलोमाटर साइकल चलाने वाले को दिल की बीमारी का खतरा आम आदमी की तुलना में आधा होता है।

❐ दुनिया में सबसे ज्यादा वाहन साइकल हैं। माना जाता है कि पूरी दुनिया में करीब सौ करोड़ साइकिल हैं। इनमें से आधे तो केवल एक देश चीन में हैं। हर साल एक करोड़ से ज्यादा साइकल का निर्माण होता है।

❐ दुनिया भर में औसत निकाला जाए, तो केवल दस प्रतिशत लोग ही ऐसे हैं जो साइकल का उपयोग रोजाना 15 किलोमीटर से ज्यादा दूरी तय करने के लिए करते हैं।

❐ केवल साइकल ही ऐसा निजी वाहन है जिसे चलाने से आदमी स्वस्थ रहता है।

❐ यदि 16 किलोमीटर की दूरी कार के बदले साइकल से तय किया जाए, तो एक आदमी रोजाना पांच किलो कार्बन डाय ऑक्साइड को वातावरण में घुलने से रोकेगा। ऐसा करके वह अपने शरीर से 360 अतिरिक्त कैलौरी जलाएगा।

❐ दुनिया को हवाई जहाज देने वाले राइट बंधु साइकल की दुकान चलाते थे। उसी में हवाई जहाज बनाने का तैयारी शुरू हुई थी।

❐ 1935 में फ्रेड ए. बीरमोर ने साइकिल से दुनिया का भ्रमण किया था। इसके लिए उन्होंने साइकल से पचीस हजार मील की यात्रा की थी। इस दौरान उनके साइकल के टायर सात बार बदले गए थे।

❐ साइकल के उपयोग के मामले में सबसे फिसड्डी देश अमेरिका है। वहां के लोग अपना केवल एक प्रतिशत काम साइकल से करते हैं। इसके मुकाबले नीदरलैंड के लोग अपना तीस प्रतिशत काम साइकल से पूरा करते हैं।

❐ नीदरलैंड की राजधानी एम्सटर्डम को साइकल की राजधानी भी कहते हैं। यहां के वाहनों में साइकल की संख्या 40 प्रतिशत है। यहां के हर दूसरे व्यक्ति के पास एक साइकल है।

❐ अब तक सबसे तेज साइकल चलाने का रिकार्ड कनाडा के सैम ह्विटिंघम के नाम है उन्होंने 133 किलोमीटर प्रति किलोमीटर की रफ्तार से साइकल को दौड़ाया था।

❐ किसी गाड़ी से बांधकर साइकल को सबसे तेज दौड़ाया था अमेरिका के जॉन होवार्ड ने। 1985 में उन्होंने इस तरह 250 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार निकाली थी।

❐ साइकल चलाने के लिए प्रेरित करने वाला शहर है पेरिस। यहां के करीब 1400 वेलिव्स साइकल सेंटर से पर्यटक साइकल किराए पर लेकर पूरे शहर में घूम सकते हैं। वह किसी भी साइकल सेंटर पर साइकल वापस कर सकते हैं। यहां साइकल चलाने के लिए अलग से रास्ता बना है। ✪

# भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो

email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है, दीप्ति मित्तल ने

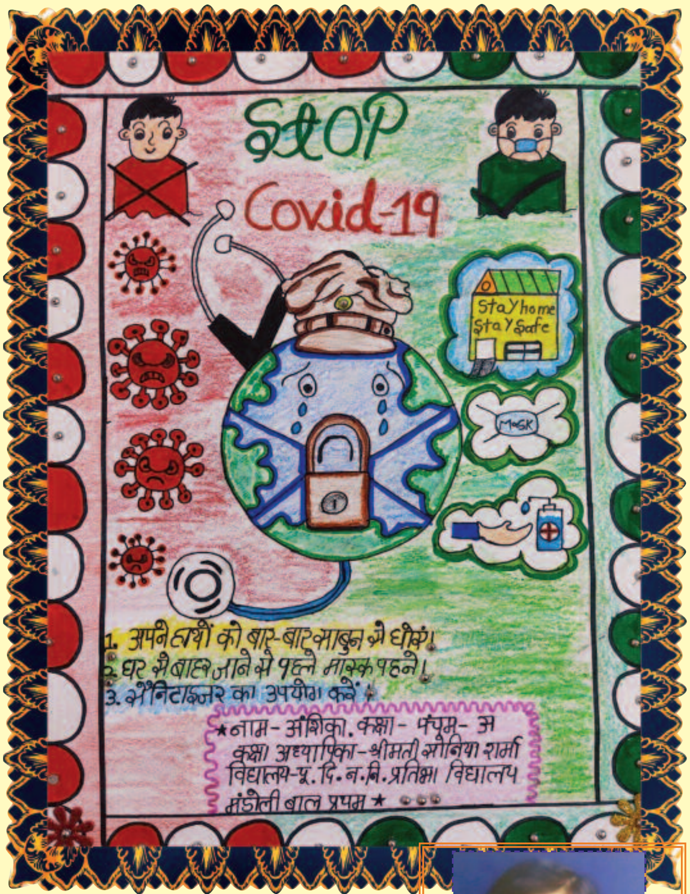


अंशिका

नाम : अंशिका
उम्र : 10
कक्षा : 5, स्कूल : पूर्वी दिल्ली नगर निगम प्रतिभा विद्यालय, मंडोली, दिल्ली

प्रथम पुरस्कार

ऐशनी सैनी

नाम : ऐशनी सैनी
उम्र : 13
कक्षा : 8
स्कूल : बिरला विद्या निकेतन, नई दिल्ली

आर्ना श्रीवास्तव

शान्वी प्रकाश

प्रिशा चौखड़ा

नाम : आर्ना श्रीवास्तव
उम्र : 13
कक्षा : 8, वात्सल्य पब्लिक स्कूल, हरिपुरा विदिशा, मध्यप्रदेश

नाम : शान्वी प्रकाश
उम्र : 5
कक्षा : एलकेजी
बचपन प्ले स्कूल, टिकमगढ़, मध्यप्रदेश

नाम : प्रिशा चौखड़ा
उम्र : 13 साल
कक्षा : 7, स्कूल : पोद्दार इंटरनेशनल, ठाणे, महाराष्ट्र

प्रकृति

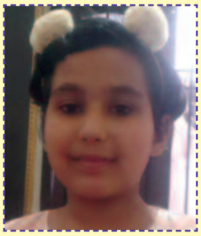

नाम : प्रकृति
उम्र : 10
कक्षा : 6
करियर प्लानेट पब्लिक स्कूल, भिवानी, हरियाणा

नाम : दीक्षान्त पटेल
उम्र : 14
कक्षा : 9
केंद्रीय विद्यालय महासमुन्द (छत्तीसगढ़)

दीक्षान्त पटेल

काव्या श्रीवास्तव

समृद्धि यादव

शुभी पाण्डेय

नाम : काव्या श्रीवास्तव
उम्र : 9 वर्ष,
कक्षा : 4,
कनौसी स्कूल, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

नाम : समृद्धि यादव
उम्र : 14
कक्षा : 9
विद्याभूमि पब्लिक स्कूल, छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश

नाम : शुभी पाण्डेय
कक्षा : 2
उम्र : 6 वर्ष, जे पी पब्लिक स्कूल, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश

# घमंडी बालक

एक स्कूल में रोहन नाम का एक लड़का पढ़ता था। वह बड़ा अच्छा और आत्मविश्वासी था। उसके मित्र भी बहुत अच्छे थे। एक दिन उसके विद्यालय में एक नया बालक आया। रोहन ने उससे पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ?"

"मेरा नाम बंटी है।" उसने उत्तर दिया। परिचय के बाद रोहन की उसके साथ मित्रता हो गई।

उस दिन बंटी स्वभाव से बहुत अच्छा प्रतीत हो रहा था। अगले दिन जैसे ही वह कक्षा में आया, तो रोहन अपनी सीट पर बैठा था। बंटी ने उसे धक्का देते हुए कहा, "यह सीट मेरी है। उठो यहां से।"

वह और घमंड से बोला, "ये सारी सीटें मेरी हैं। यह क्लास, यहां तक कि पूरा स्कूल ही मेरा है। हटो यहां से। मेरे पिता जी बहुत बड़े आदमी हैं। समझे।"

रोहन मुसकराते हुए हट गया।

बंटी घमंडी ही नहीं, बल्कि बड़े दर्जे का शैतान बालक था। उसने जाती हुई लड़कियों के अड़ंगी मार दी, जिससे वे फिसलकर गिर पड़ीं।

बहुत दिनों तक उसकी शैतानियां चलती रहीं। सब उससे परेशान तो रहते, लेकिन किसी ने भी उससे मित्रता नहीं तोड़ी और न ही उसकी कोई शिकायत की। रोहन ने ही सबको ऐसा करने से रोका हुआ था। लेकिन उसकी शैतानियां बढ़ती गईं। आखिर एक दिन रोहन ने अपने मित्रों से कहा, "बंटी को सबक सिखाने का समय आ गया है।"

एक लड़की बोली, "कितने दिन से हम उसे तुम्हारे कहने पर ही झेल रहे हैं। तुम उसके चहेते दोस्त बने हुए हो और हम भी तुम्हारे ही कारण घसीटे जा रहे हैं।"

रोहन ने कहा, "उसको सुधारने के लिए हम उसकी ही भाषा का प्रयोग करेंगे।"

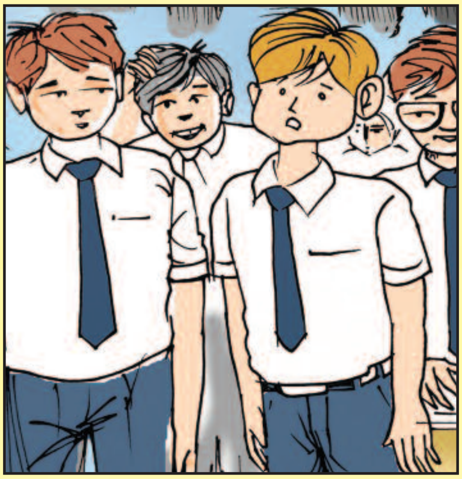

इस पर सबने हामी भर दी।

योजना के अनुसार अगले दिन सभी बंटी के घर खेलने गए। कई खेल खेलने के बाद रोहन बोला, "आओ टीचर-टीचर खेलते हैं।"

खेल में रोहन टीचर बना व बाकी सब विद्यार्थी। बंटी दूसरे विद्यार्थियों के साथ बात करने का नाटक करने लगा। इस पर टीचर को गुस्सा आ गया और उसने उसे जोर से एक डंडा जड़ दिया।

बंटी को बहुत दर्द हुआ और वह चीखा, "आआ...., तुमने मुझे असली में डंडा मार दिया।"

रोहन डरते हुए बोला, "अरे, चिल्ला क्यों रहे हो, गलती से लग गया।"

बंटी लाल-पीला होते हुए बोला, "तुम ध्यान से नहीं कर सकते थे। अब मुझे नहीं खेलना तुम्हारे साथ। जाओ यहां से।"

सब मित्र धीरे से मुसकराते हुए जाने लगे। इससे पहले रोहन ने रबर का एक बड़ा-सा मकड़ा बंटी के बैग में छुपा दिया।

बंटी मकड़े से बहुत भयभीत होता था। उसने गृहकार्य करने के लिए जैसे ही अपने बैग में हाथ डाला, मकड़ा उससे उलझ गया। वह देखते ही जोर-जोर से चिल्लाने लगा, "मम्मी बचाओ, मम्मी बचाओ।"

जैसे ही उसकी मां ने उसकी चीख सुनी, वह दौड़ी-दौड़ी आई। तब तक वह अपने हाथ को झटककर मकड़े को दूर फेंक चुका था। जिसे देखकर उसकी मां जोर-जोर से हंसते हुए बोली, "यह तो खिलौना मकड़ा है। रबर का है। तुम कितने डर गए। तुम्हारे दोस्तों में से किसी ने यह शरारत की होगी। तुम भी उन्हें डराते रहते होंगे।"

बंटी का गुस्सा कुछ देर के लिए और बढ़ गया। फिर थोड़ी देर बाद वह अपनी बेवकूफी पर मुसकराने लगा।

अगले दिन कक्षा में उसने सब मित्रों पर पहले तो नकली नाराजगी दिखाई, फिर सबसे बोला, "तुम सबने मुझे मेरी गलती का एहसास करवाया, इसके लिए बहुत धन्यवाद और मेरी वजह से जो परेशानी तुमने झेली, उसके लिए मैं माफी चाहता हूं। आगे से कोई शैतानी नहीं।"

सभी मित्र खिलखिलाकर हंसने लगे।

नाम : मानवी
आयु : 9 वर्ष
कक्षा-5, विवेकानन्द वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, करनाल (हरियाणा)

# मेरी दादी

**दादी** है मेरी सबसे प्यारी
मैं रूठू, तो मुंह फुला लेती दादी
मेरे गुस्से को हंसकर
गले लगाती दादी
मेरे मनचाहा पकवान
को हमेशा बनाती दादी
सच्ची दोस्त कहलाती दादी।

सब से झगड़ लेती
लेकिन दादी मुझसे
कभी नहीं झगड़ती
मैं रूठ जाऊ तो
सारे काम छोड़कर
मुझे मनाने बैठ जाती दादी

सच्चे मित्र की तरह मुझे पढ़ाती
एक शिक्षक की तरह
मुझे सही राह पर चलना सिखाती
एक मां की तरह
मुश्किल हालातों से लड़ना सिखाती
एक पिता की तरह
संघर्ष करना सिखाती दादी मेरी
इसलिए
दादी मेरी सच्ची कहलाती।

नाम : काजल साह
आयु : 15 वर्ष
कक्षा : 10,
खन्ना हाई स्कूल फॉर गर्ल्स, कोलकाता

चित्र क्रेडिट : गूगल

# जल से जीवन

**जल** से जीवन इसे बचाओ
व्यर्थ कभी न इसे बहाओ।
इससे अपनी प्यास बुझाओ
पियो खूब और रोग भगाओ।
गर्मी-सर्दी स्वस्थ रहोगे
ताजे जल से रोज नहाओ।
करो सुरक्षित तालाबों को
इसमे अपनी नाव चलाओ।
सींचो पौधे बगिया क्यारी
जल से धरती खूब सजाओ।

नाम : वरेण्य
आयु : 10 वर्ष
कक्षा : 5,
नारायणी इंटरनेशनल स्कूल,
अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

# इनसान

फेंक देता वह खाना
जिसमें होता है एक बाल,
नाम है जिसका इनसान
उसकी होती मोटी खाल।

पत्थर मंदिर जाकर
बन जाता भगवान है,
मंदिर जाकर भी छल
करता वह इनसान है।

मुर्दों को जलाकर है नहाता
कुछ को नहाकर दफनाता,
हो हिंदू या हो मुसलमान
है तो दोनों ही इनसान।

बदल गया है सब का जीवन
मंदिरों में भी होता फैशन,
देश के शहीद हुए जवान
खेत वह भी इनसान।

दुनिया की बात आधा फसाना है
यह सब कलयुग का पैमाना है,
देखिए अब पछताते होंगे भगवान
आखिर क्यों बनाया इनसान।

नाम : खुशी कुमारी
कक्षा : 9
उम्र :12
बांकीपुर गर्ल्स हाई स्कूल, पटना, बिहार

# माँ

माँ तू कितनी भोली-भाली
माँ तू कितनी प्यारी है।
माँ तेरे ही चरणों में तो
मिलती दुनिया सारी है।

तू मीठे पकवान खिलाए
तू बच्चों से प्यार जताए,
जब हम रोए, हमें हँसाए
माँ तू हमसे दूर न जाए,
तू ही पालनहारी है
माँ तू कितनी प्यारी है।

सुख-दुःख से अनजाने होकर
जिसने जीना सीख लिया,
इस जग को भी जीता उसने
उस जग को भी जीत लिया,
माँ तू कितनी प्यारी है
माँ तू कितनी न्यारी है।

माँ मैं तेरी इस बात को
सोच के चलता जाऊँगा,
जीवन पथ पर सुबह-शाम
बस आगे बढ़ता जाऊँगा,
माँ तू दुनिया सारी है
माँ तू कितनी प्यारी है।

निखिल कुमार राव
उम्र : 14 वर्ष,
कक्षा : 9,
आलोक भारती शिक्षण संस्थान, बेतिया, बिहार

तृतीय पुरस्कार

# लालकिले की सैर

**छुट्टी** की घंटी बजने वाली थी, तभी कार्यालय से आई एक सूचना ने हम सभी बच्चों के चेहरे पर मुसकान ला दिया। अध्यापक ने हम सभी बच्चों को बताया कि हमें लाल किला घूमने के लिए जाना है।

हम सभी ने एक स्वर में पूछा, "कब चलना है ?"

अध्यापक ने हम सभी को शांत करते हुए कहा, "अगले रविवार को हमें चलना है, पर उससे पहले यह आवश्यक है कि आप हमें अपना नाम शुक्रवार तक दे दें, ताकि हमें यह पता चल सके कि कितने बच्चे को भ्रमण पर जाना है।"

शुक्रवार तक सभी बच्चों ने अपने नाम दर्ज करवा दिया, लेकिन राजू ने अपना नाम दर्ज नहीं करवाया। अध्यापक ने पूछा, "राजू तुम लाल किला क्यों नहीं जाना चाहते हो ?"

राजू ने जवाब दिया, "सर, मेरे मामा की शादी है, इसलिए मैंने अपना नाम नहीं दर्ज करवाया है।"

यह सुनकर अध्यापक ने कहा, "कोई बात नहीं अगले बार तुम हमारे साथ जाना।" राजू ने सिर हिलाकर हां कहा।

अगले दिन अध्यापक ने सभी बच्चों को अपने माता-पिता से वहां जाने के लिए स्वीकृति पत्र के साथ आने के लिए कहा। सारे बच्चों के माता-पिता ने वहां जाने की स्वीकृति दे दी। अब सारे बच्चों की खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

रविवार को अध्यापक ने सभी बच्चों को अपने सामान के साथ आठ बजे विद्यालय आने को कहा।

अगले दिन आठ बजे सभी बच्चे विद्यालय में अपने सामान के साथ उपस्थित थे। अध्यापक ने सभी बच्चों को पानी की बोतलें दी और नाश्ता का पैकेट दिया। बच्चों को उनके माता-पिता ने भोजन पैक करके दे दिया था

बच्चों ने अपने अध्यापक से कहा, "हमारे पास तो खाना है ही।"

पर अध्यापक ने उन्हें समझाया, "दूर का सफर है और रास्ते में बहुत भूख लगेगी, इसलिए ये नाश्ता रख लो।" सभी बच्चों ने खुशी-खुशी नाश्ता और पानी रख लिया।

अध्यापक ने लालकिला जाने के समय सभी बच्चों की गिनती की, तो बच्चों को संख्या तीस थी। सभी बच्चों ने रास्ते में कई जानकारियां इकट्ठी कीं और उसे अपनी पुस्तिका में नोट किया। वे जब लालकिला के अंदर पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि वहां एक सुंदर सा बगीचा था जिसमें पेड़ पौधे थे। मोटी-मोटी दीवारें, बड़े-बड़े महल और विशाल द्वार को देखकर बच्चे बहुत प्रसन्न हुए। अध्यापक ने बच्चों को लालकिला के इतिहास के बारे में बताया। दिन के तीन बज चुके थे, समय इतनी जल्दी बीत गया कि हम में से किसी को पता ही नहीं चला। अब हम सबको भूख लग रही थी। अध्यापक ने सभी बच्चों को खाने की अनुमति दी। सभी बच्चों ने मैदान में गोल घेरे में बैठकर भोजन किया।

खाने के बाद सभी बच्चों ने कुछ सामान खरीदा और वापस आकर अपने बस में बैठ गए। रास्ते में वर्षा होने लगी और मौसम सुहावना हो गया। हम सब वापस विद्यालय आ गए। बच्चों ने घर आकर अपने माता-पिता से सभी बातों की चर्चा की।

इधर राजू ने अपने मामा से शर्त रखा, "मैं शादी में तभी चलूंगा जब आप हमें लाल किला घुमाने का वादा करेंगे।"

मामा जी ने राजू की शर्त मान ली और शादी से वापस आने के बाद मामी और परिवार के अन्य सदस्य के साथ लाल किला की सैर पर गए।

जब क्लास में शिक्षक ने सबके नोट्स देखे, तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि राजू ने भी नोट्स जमा करवाया था। शिक्षक के पूछने पर राजू ने सारी बातें बताई, तो सभी बच्चों ने राजू की बुद्धिमानी पर ताली बजाई।

नाम :दिव्यांशु प्रियम झा
आयु : 11 वर्ष
कक्षा : 6,
डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल,
सहरसा, बिहार

3rd

लल्लू
अरे लल्लू, तुम मुर्गी के साथ मत खेलो।
मैं खेल नहीं रहा, इसके पर गिन रहा हूं।
दुनिया में कोरोना वायरस फैला हुआ है, सावधान रहना।
चित्र और परिकल्पना : चलम : शाजी
मुर्गी से गंदगी होगी, बीमार हो जाओगे। उसे दूर रखो।
ठीक है।
बाद में...
अरे, मुर्गी को क्या हुआ?
कुछ नहीं।
कहीं कोरोना से तो नहीं मरी?
सुना है, भारत में जानवरों में कोरोना नहीं है।
फिर, यह कैसे मरी?
आपकी बात टॉमी ने सुन ली थी। शायद उसने अपनी इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए...
ShajiMalloor

## 1. शब्दों की उलटफेर

प्रकाश तातेड़, उदयपुर

नीचे दिए गए प्रत्येक वाक्य में दो रिक्त स्थान है, इन्हें दो ऐसे शब्दों से भरना है जो आपस में उलटने से बनते हैं। जैसे, प्रथम वाक्य में नशा और शान भरने से वाक्य पूर्ण हो जाता है । अब इन वाक्यों को ध्यान से पढ़िए और रिक्त स्थान भरिए।

1. वह.......करके झूठी..... से झूम रहा था ।
2. अंत में भारत के खिलाड़ी....... से एक गोल करके मैच.........।
3. तुम मेरे......... हो, अतः यह....... काम तुम्हें ही करना है।
4. ..........नेता ने कहा,..........प्रदूषण हमारे शहर की प्रमुख समस्या है।
5. दरवाजे पर...... लगा है, मैं चाबी...... हूं।
6. ऊंट के मुंह में.......देकर उसे...... नहीं कर सकते।
7. ...........गोपाल ने नदी में कूदकर........ का परिचय दिया।
8. वैज्ञानिकों ने.........लगाया कि पृथ्वी का......... क्यों बढ़ रहा है।
9. ............में रावण के सिर का......... देखकर हंसी आ गई।
10. जलने पर कोयला........ हो जाता है किंतु ...........सोना और चमकता है।
11. यहां धूम्रपान पर...... है, इसलिए आप सिगरेट पीना बंद........।
12. जहां....... बहती है,...... बंधुओं का दुख हरती है ।
13. मंदिर में भक्तों ने........ किया, बाद में ..........का नाच सबको मन भाया ।
14. ससुराल वालों ने .......को जलाकर....... डाला।
15. मीरा और...... ने भक्ति की नई...... बहाई।

## 3. शब्द बनाओ

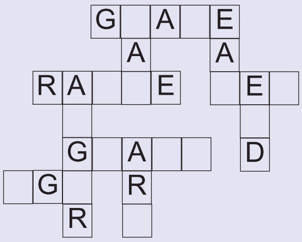


**R N G D E A**

## 4. जरा बताओ

इस खिलाड़ी का संबंध भारत के किस राज्य से संबंध है ?
क. मणिपुर, ख. मिजोरम
ग. नागालैंड, घ. मेघालय

## 5. क्रम बताओ

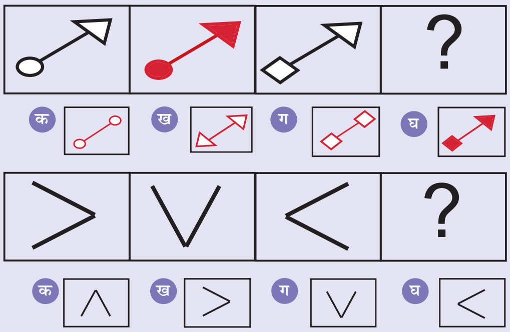


## 2. क्या अलग है

1. क. रोहित शर्मा, ख. जसप्रीत बुमरा, ग. विराट कोहली, घ. शिखर धवन
2. क. शिमला, ख. मनाली, ग. धर्मशाला, घ. नैनीताल
3. क. फूड प्रोसेसर, ख. ओवन, ग. कुकर, घ.कंप्यूटर
4. क. लाल किला, ख. कुतुब मीनार, ग. पुराना किला, घ. लोटस टैंपल
5. क. भारत, ख. भूटान, ग. मंगोलिया, घ.तंजानिया
6. क. लंदन, ख. मास्को, ग. पेरिस, घ. जिनेवा
7. क. ममता बनर्जी, ख. सुषमा स्वराज, ग. राबड़ी देवी, घ. शीला दीक्षित
8. क. इंद्रकुमार गुजराल, ख. चंद्रशेखर, ग. चौधरी चरण सिंह, घ. डॉ. मनमोहन सिंह
9. क. लड्डू, ख. बर्फी, ग. रसगुल्ला घ. खीर

## पहेलियों के उत्तर

### 1. शब्दों की उलटफेर

1. नशा-शान, 2. तेजी-जीते, 3. सखा-खास, 4. युवा-वायु, 5. ताला-लाता, 6. जीरा-राजी, 7. सहसा-साहस, 8. पता-ताप, 9. नाटक-कटना, 10. राख-खरा, 11. रोक-करो, 12. नदी-दीन, 13. कीर्तन-नर्तकी, 14. रमा-मार, 15. राधा-धारा

### 2. क्या अलग है

1. जसप्रीत बुमरा, क्योंकि बाकी बैट्समेन हैं।
2. नैनीताल, क्योंकि हिमाचल प्रदेश में है।
3. कंप्यूटर, क्योंकि बाकी किचन से संबंधित हैं।
4. लोटस टैंपल, क्योंकि बाकी भारत के स्वतंत्र होने से पहले बने थे ।
5. तंजानिया, क्योंकि बाकी एशियाई देश हैं।
6. जिनेवा, क्योंकि बाकी अपने देश की राजधानी हैं।
7. राबड़ी देवी, क्योंकि बाकी केंद्रीय मंत्री भी थीं।
8. डॉ. मनमोहन सिंह क्योंकि बाकी गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री रहे।
9. खीर, क्योंकि बाकी मिठाई हैं।

### 3. शब्द बनाओ

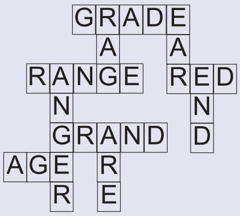


### 4. जरा बताओ

एम. मेरी कॉम, मणिपुर

### 5. क्रम बताओ

1 घ
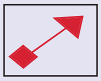

2 क
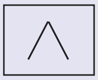

# बास्केट बॉल

**बास्केट** बॉल दुनिया के सबसे लोकप्रिय खेलों में से एक है। खासकर अमेरिका में तो इस खेल के प्रति दीवानगी का आलम देखने को मिलता है।

इस खेल का आविष्कार कैसे हुआ, यह भी एक रोचक कहानी है। अमेरिका के मैसाचुयेट्स के एक कॉलेज इंटरनेशनल यंग मैंस क्रिस्चियन एसोशिएसन ट्रेनिंग स्कूल में एक प्रोफेसर थे, डा. जेम्स नाई स्मिथ। वह वहां शारीरिक शिक्षा की क्लास लेते थे। 1891 के दिसंबर महीने में एक दिन बारिश हो रही थी। वह अपनी क्लास नहीं ले पा रहे थे। तब उन्होंने सोचा कि कोई ऐसी जुगत लगाई जाए कि विद्यार्थी परिसर के अंदर ही बिना भीगे कोई खेल खेल लें।

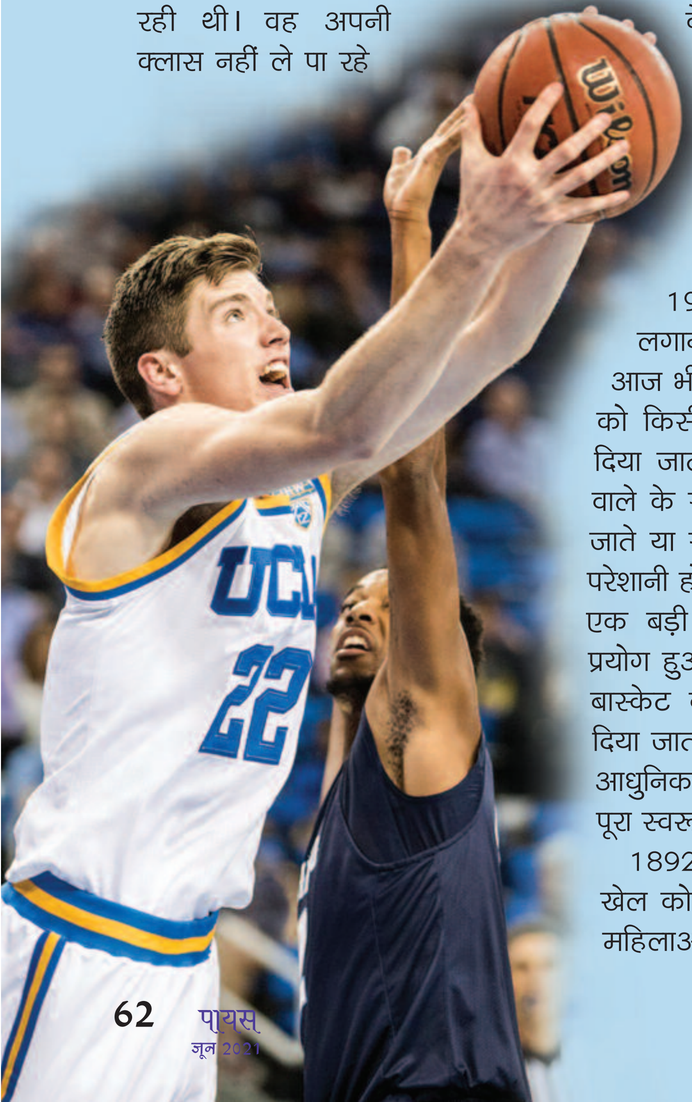

तब उन्होंने एक दीवार पर एक बास्केट को टांग दिया। फिर बच्चों से कहा कि उसमें बॉल डाले। यह नया खेल मजेदार था। तब डा. जेम्स ने इस खेल के कुछ नियम लिखे। उस समय बास्केट का निचला हिस्सा कटा नहीं होता था। अतः हर बार बॉस्केट करने के बाद उसमें से बॉल को निकलना पड़ता था। यह बड़ा मुश्किल काम था, अतः समय के साथ बास्केट का निचला हिस्सा काट दिया गया।

सन 1905 तक ऐसे ही बास्केट लगाकर ही इस खेल को खेला जाता रहा। पर 1906 में इसे हटाकर रिंग लगाने की परंपरा शुरू हुई, जो आज भी जारी है। पहले इस रिंग को किसी भी बालकनी पर टांग दिया जाता था। पर इससे खेलने वाले के साथ-साथ वहां से आते-जाते या खेल देखते लोगों को भी परेशानी होती थी। तब इस रिंग को एक बड़ी लकड़ी पर लगाने का प्रयोग हुआ। इस लकड़ी के सहारे बास्केट को मैदान में खड़ा कर दिया जाता था। इस तरह आज के आधुनिक बास्केट बॉल को इसका पूरा स्वरूप मिला।

1892 में महिलाओं ने इस खेल को खेलना शुरू किया और महिलाओं में इसे लोकप्रिय किया सैंडा ब्रेसनन ने। उसने खुद जाकर डा. जेम्स नाई स्मिथ से इस खेल को समझा, फिर महिलाओं को सिखाया। पुरुषों से पहले महिलाओं मे इस खेल को आधिकारिक रूप से खेला और उनके बीच प्रथम मैच 21 मार्च 1893 को हुआ।

9 फरवरी 1895 को पहली बार हैमलिन यूनिवर्सटी और स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर के बीच पुरुषों के बास्केट बॉल का एक मुकाबला हुआ।

1932 में इंटरनेशनल बास्केट बॉल फेडरेशन की स्थापना हुई। इसकी स्थापना आठ देशों अर्जेंटीना, चेकोस्लाविया (अब चेक और स्लोविया), इटली, ग्रीस, लातविया, पुर्तगाल, रोमानिया और स्विट्जरलैंड ने मिलकर की थी।

ओलंपिक तक बास्केट बॉल को पहुंचने में काफी समय लगा और 1936 के बर्लिन ओलंपिक में यह पहली बार शामिल हुआ। तब अमेरिका ने कनाडा का हराकर पहली बार चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया था। 1950 में पहली बार बास्केट बॉल की विश्व चैंपियनशिप अर्जेंटीना में हुई, जबकि महिलाओं की विश्व चैंपियनशिप पहली बार चिली में 1953 में आयोजित हुई। 1976 मांट्रियल ओलंपिक में महिला बास्केट बॉल को शामिल किया गया।

# हंसना जरूरी है

पूनम, "चलो, बाहर घूमने चलते हैं, कितनी अच्छी हवा चल रही है।"

रिंकू, " नहीं, मैं नहीं जाऊंगा।"

पूनम, "क्यों ?"

रिंकू, "मैंने अभी-अभी आइसक्रीम खाई है, बाहर जाने से पिघल जाएगी।"

पापा, "बेटा, बताओ कि क्रिकेट में एक ओवर में कितनी बॉल होती हैं ?"

बेटा, "पापा, बॉल तो एक ही होती है।"

एक लड़की दुकानदार से, "एक ऐसा साबुन देना, जो कम घिसे और जिससे नहाने के बाद चेहरा लाल हो जाए।"

दुकानदार (नौकर से), "मैडम को एक ईंट का टुकड़ा दे दो।"

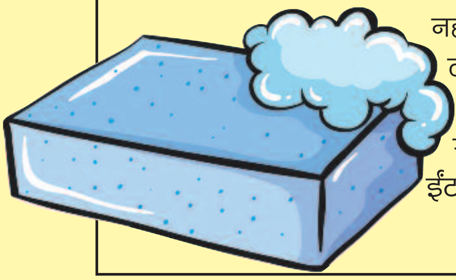

एक बीमार बच्चा जब किसी भी हालत में कड़वी गोली खाने को राजी नहीं हुआ, तो डॉक्टर ने गोली को लड्डू के अंदर रखकर कहा, "बेटा, लड्डू खा लो।"

थोड़ी देर बाद डॉक्टर ने पूछा, "क्यों बेटा, लड्डू खा लिया ?"

बच्चा बोला, "हां, डॉक्टर अंकल, लड्डू तो खा लिया, पर गुठली फेंक दी।"

एक इंजीनियर, "मुझे समझ नहीं आता कि तुम लोग इनसान को ठीक करते हो और हम मशीन को ठीक करते हैं। फिर भी लोग तुम्हें क्यों भगवान कहते हैं ?"

डॉक्टर, "क्योंकि हम इंजन चालू रखकर ठीक करते हैं।"

टीचर, "स्टेना, तुम इस कानून की किताब को चिमटे से पकड़कर क्यों ला रही हो ?"

स्टेना, "सर, आप ही तो कहते हैं कि हमें कानून को हाथ में नहीं लेना चाहिए।'

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

# पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ-साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।


बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609

रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**


◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं--

✦ संरक्षक बनकर ✦ मासिक अनुदान देकर ✦ यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर
✦ विज्ञापन देकर ✦ हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर ✦ किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें--


**ONLINE TRANSFER / UPI**

**STATE BANK OF INDIA**
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

**PAYTM : 7982014609**
**PHONEPE : 9810556533**
**ANIL JAISWAL**

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**